मुर्शिद का प्रेम

गीता भगवान जी के पत्र

divinepramilabhagwan.com

मुर्शिद का प्रेम

गीता भगवान जी द्वारा अपने प्रेमियों को लिखे गए
कुछ दुर्लभ पत्रों का संकलन

गीता भगवान जी

divinepramilabhagwan.com

INDEX

1. गुरुजी का पत्र गीता भगवान को.. 1

    शुद्ध सत् चित आनंद स्वरूप मेरे प्यारे..1

2. गुरुजी वाणी 3

    दादा भगवान आकाशवाणी टेप..3

3. दादा भगवान पत्र संख्या - 1 10

    एक बार एक व्यक्ति ने विवेकानंद..10

4. गीता भगवान पत्र संख्या - 2..13

    You Are Exactly Like Me.. 13

5. गीता भगवान पत्र संख्या - 3..15

    शुद्ध स्वरूप परम प्रिय.. 15

6. गीता भगवान पत्र संख्या - 4..17

    गुरु के बंधन में भी मस्ती है 17

7. गीता भगवान पत्र संख्या - 5.. 20

    सदा अपनी आत्म मस्ती में मस्त..20

8. गीता भगवान पत्र संख्या - 6.. 24

    अपनी मौज मस्ती में मस्त..24

9. गीता भगवान पत्र संख्या - 7..... 27

प्रिय जकार्ता वासी.....27

10. गीता भगवान पत्र संख्या - 8..... 34

दुनिया की सारी विद्या अविद्या.....34

11. गीता भगवान पत्र संख्या - 9..... 39

प्रेम पत्र तुम्हारा आज मिला.....39

12. गीता भगवान पत्र संख्या - 10 45

अति सूक्ष्म.....45

13. गीता भगवान पत्र संख्या - 11..... 49

वेदांत का सार.....49

14. गीता भगवान पत्र संख्या - 12..... 55

हो सकता है कि आपने गुनाह.....55

15. गीता भगवान पत्र संख्या - 13..... 58

सतचित आनंद स्वरूप प्रिय.....58

16. गीता भगवान पत्र संख्या - 14..... 63

जिसने सजातीय और विजातीय स्वगत.....63

17. गीता भगवान पत्र संख्या - 15..... 84

तिल में से तेल तब तक नहीं निकलेगा.....84

18. गीता भगवान पत्र संख्या - 16..... 97

शुद्ध स्वरूप परम प्रिय सदैव 97

19. गीता भगवान पत्र संख्या - 17..... 98

संकेत मिलन का, भूल ना जाना.....98

20. गीता भगवान पत्र संख्या - 18.....100

प्रेम पत्र तुम्हारा मिला 100

21. गीता भगवान पत्र संख्या - 19.....102

दिल के पत्र तुम्हारे बार बार मिलते 102

22. गीता भगवान पत्र संख्या - 20 103

शुद्ध स्वरूप परम प्रिय..... 103

23. गीता भगवान पत्र संख्या - 21.....105

पत्र तुम्हारा स्नेह युक्त आज मिला..... 105

24. गीता भगवान पत्र संख्या - 22 106

सत चित आनंद स्वरूप परम प्रिय..... 106

25. गीता भगवान पत्र संख्या - 23 108

The cheapest stupidity is finding faults..... 108

गुरुजी का पत्र गीता भगवान को...

शुद्ध सत् चित आनंद स्वरूप मेरे प्यारे गीता भगवान, तुलसी माता, श्याम भगवान, मीरा भगवान, सुंदर चाचू, वीना चाची एवम् अन्य सभी मेरे प्रभु के प्यारे बॉम्बे नगरी के प्रेमी। सदैव सभी को आनंदित करने वाले प्रभु आपके साथ इस बार का मिलन प्यार अविस्मरणीय साथ, वे अमूल्य क्षण हर समय याद आते हैं। आपने अपने पावन प्रेम से, तीर्थों को भी पवित्र किया। हर पल अपना साथ, अपना आशीर्वाद देकर कृतार्थ किया। आपके उपकारों की चर्चा ये धरा क्या गा सकेगी। हरिद्वार का एक एक कण भी आपका आभारी हो गया। गंगा भी पवित्र हुई, ऐसे ब्रह्मज्ञानी के चरणों का स्पर्श पाकर। सचमुच हम सबके कितने ऊंचे भाग्य हैं जो आपका साथ मिला। कलयुग में सतयुग का वास हो गया। सभी के लिए इतने कष्ट सहन करके, अपने सुखों को भुलाकर अपने एकांतिक सुख का त्याग करके, एक एक का उद्धार किया है। गुरु नानक देव जी की तो बातें ही सुनी थीं कि उन्होंने रटन करके एक एक के घर जाकर यह अलख जगाया, पर आपका तो जीवन हम सबके आगे एक बड़ी मिसाल है, कि कैसे आपके अंदर करुणा का भाव है, अन्मोल खज़ाना हर एक को बांटा है। बालकवत सरल भी और अंदर इस सच को धारण करके हरेक को इस आनंद से सराबोर किया है। आपका नियम संयम सब कुछ हर पल सिखाता है। अथक होकर अपना जीवन ज्ञान यज्ञ में स्वाहा कर रहे हैं।

धन्य है धरती, धन्य है माली जो आज दिन तक बीज डाल रहे हैं। सत्गुरु तेरी है महिमा अपार, तुमने अपने तन, मन, धन की कुर्बानी देकर जीना सिखाया है। तेरे उपकारों को हरगिज़ भुला ना पाएंगे, एहसान किए हैं इतने, कर्ज़ा चुका ना पाएंगे। तेरे ये अनमोल वचन सबको सुनाते रहें, ये आपका आशीर्वाद हमेशा चाहिए। आपकी कृपा से ही यह जीवन चल रहा है, चलता रहेगा। यह जीवन आपका ही है, आप ही इसको कार्य में लगाकर, जीवन को सफल कर रहे हैं। अब तो यह जन्म तुम्हारे लेखे।

धरा पर आना सत्गुरु का सबके लिए मुबारक है। हर प्रेमी आपके गीत गा रहा है। सभी को आपने ख़ुश किया। अपने आप को झुका दिया, सबको उठाने के लिए। आपके हृदय में सभी के लिए प्यार की पावन गंगा बहते हुए देखी, जिसने सभी को पवित्र किया। अब आपके आने का इंतजार अभी से है ,आपका किया हुआ वादा है, वो आपको पूरा करना है। सभी के लिए प्यार।

गुरुजी वाणी

दादा भगवान आकाशवाणी टेप

अधिक से अधिक सुमिरन में समय दो। संसार स्वप्न, रब तू अपना। गुरु कृपा ही केवलम इरादा पक्का रखो। भगवान के लिए प्रेम रखो, संसार से तो कुछ मिलने वाला नहीं है।

विवेक, विश्राम से जीवन को पुष्ट करो। सुनने के इच्छुक बैठे हो। विचार शून्य होकर रहो। जीवन समस्या, ईश्वर सत्य है। प्रेम केवल भावना नहीं, वो आप जो हैं, वही है। जीवन उत्साह है, आनंद है, प्रेम है। विविधता में समानता को प्रगट करो। तनाव रहित मन और रोग रहित तन। प्रकृति में उत्पत्ति और लय होता है।

ब्रह्मज्ञानी को ब्रह्मज्ञानी ही पहचान सकता है। To catch a thief set a thief. चोर को पकड़ने के लिए चोर को ही रखो। वो ही उसको पकड़ सकता है। हम सबको अपना बना दिया है। तुम एक बेटे को अपना समझते हैं। गुरू तुमको भी अपना आप समझते हैं। Love wins Love. हम राम राम कहते हैं, तो आप कहते हैं राम ही राम। Only God exists. सब मेरे को प्यार करते हैं। Love is God, God is Love. बिना किसी इच्छा के कर्म ही निष्काम है। मुझे फल की इच्छा

नहीं है। सबको निष्काम कर्म करना चाहिए। तुम हर कर्म करके कहते हो, मैंने ये कर्म किया। तुम अहंकार और इच्छा से कर्म करते हो। निष्काम कर्म ही सच्चा कर्म है। भगवान जैसे काम करो। कर्म दिव्य, जन्म दिव्य जो ऐसा जानते हैं, वो ही सच जानते हैं। हम समझते थे कि कृष्ण के कर्म दिव्य और जन्म दिव्य। तुम्हें इस ठगी को हटाना है। हम कर्म का कर्तापन नहीं करते हैं, ना ही उसमें हमारी कोई इच्छा है या नाम के लिए कर्म करते हैं। अर्जुन अपने को शरीर मानता है, कृष्ण के लिए कहते हैं भगवानोवाच। एक आत्मा समझता है दूसरा शरीर समझता है। हरेक को अपनी value रखनी है। Know thyself - Who you are, What you are - अपनी self enquiry करो। You are God Yourself. अपने को क्या समझते हैं। ये अपनी value रखनी है कि मैं आत्मा हूं। जो आदमी अपने को नहीं जानता उससे हम बात कैसे करें। First you must know who you are. हम डॉक्टर हैं, मैनेजर हैं ये झूठ है। जो अपने को नहीं पहचानता, उससे हम बात कैसे करें। रमन महर्षि सभी को यही बात बताता था। जो शराब पीना अच्छा समझता है तो वो छोड़ेगा नहीं। तुम भी जब माया में खुश बैठे हैं तो तुम भी हमारी बात नहीं मानेंगे। मां बाप ने जो तुम्हारा नाम रखा है, तुम वही पक्का करके बैठे हो। एक ही नाम सभी पुकारते हैं। तुमको आत्मा बोलने

वाला कोई आदमी नहीं है। किसी गुरु ने भी आत्मा नहीं सुनाई। वह भी नाम रूप की बात करते हैं। जब तुमको कोई आत्मा करके जानेंगे। तुम हमको पहचानने वाला हमारा भी बाप है। मैं क्या ये कोई भी नहीं जानता। मैं क्या हूं कैसा हूं ये किसी को मालूम नहीं है। सच्चे भगवान ने ही यह सच बताया, भूलना नहीं है। संत की महिमा वेद ना जाने तो वेद पढ़ने की क्या ज़रूरत है। तुम पहले से ही आत्मा है। सच्ची बात है कि मैं ही एक से अनेक हुआ हूं। कितना भी शास्त्र पढ़ेगा तो कुछ नहीं मिलेगा। हम तो जीता बैठता है, explain कर सकते है। शास्त्र पढ़कर भी doubts नहीं जाएंगे। गीता में हर प्रश्न का उत्तर लिखा है। अब दुनिया में ऐसा कोई शास्त्र नहीं है।

अपनी self enquiry करो तो अंदर से पता चलेगा मैं कौन हूं। तुम जो मेरा मेरा कहता है, ये तेरा है नहीं। मेरा कहां गया उसे देख सकते हैं। तुम जब सपना देखते हैं तो सब सच लगता है पर उठने पर लगता है ये सब झूठा है। जगत है, रैन का सपना। एक राजा ने कहा, मेरे को कभी नींद से नहीं जगाना। उसका बेटा मरने लगा तो रानी ने कहा उसे उठाओ। जब राजा को जगाया तो बोला, मैं अभी तीन बेटों से खेल रहा था, वो मर गया, अभी तीन बेटों को रोए या एक को रोए। जगत में भी सब नाश होने वाला है। जाग्रत में भी सब destroy होने वाला है। You say

but see not. You say God is in the sky. दुनिया सच्ची है या भगवान सच है। Invisible God तुम देखते नही हैं। Only God is truth. One became many. I play some performance - All of the world people see me not. मैं ही तारे, सागर, मछली सब बन गया। What is the truth? You can't see God. सन्यासी कहते हैं There is no world. तो फिर world है क्या?

ब्रह्मज्ञानी को कुछ ग़लत करते हुए देखते हैं तो वह अज्ञानी है। अज्ञान जाएगा, ज्ञान से। सन्यासी जगत का त्याग करके जाते हैं पर उन्हें इच्छा होती रहती है। पर ज्ञानी कुछ मांगता नहीं है। वो ही सच्चा सन्यासी है। भगवान एक से अनेक हुआ। One became many. एको ओहम सत्गुरु प्रसाद। मैं एक भगवान अनेक हुआ। निराकार रूप मेरा साकार सृष्टि सारी। नाम रूप ये नाशवान है, ये सच नहीं है। हस्ती, भांति प्रिय यह सच्चा है। नाम रूप देखकर उसे ही सच्चा मानते हैं। 80 साल हो गए तो भी नाम भूलते नहीं है। हो मैं दीर्घ रोग है। मैं मैं नहीं करनी है, यह बकरी की भाषा है। आज दिन तक यह हो मैं नहीं जाती है। अहमता, ममता, करता नहीं जाता है। मेरी ममता काट। तुम मेरा - मेरा कहके माया में भूल गए हैं, भूल भुलैया में फंस गए हैं। लाखों लोग लोकल ट्रेन

में माया के लिए घूमते हैं। हरेक माया में अंधे हो गए हैं यानी नशा चढ़ गया है। तुम पागल हो गए हैं, कहते हैं माया ज़रूरी है पर हम कहते हैं माया ज़रूरी नहीं है, ये वैश्या है कभी भी एक की होकर नहीं रहती। Money is useless. आखिर मिला ना जे रब, और सब मिला तो क्या हुआ। अमीर लोग साध संगत को बुलाकर रहते हैं। ऐसा सत्कर्म करते हैं। पर जब उनका शरीर शांत हो गया तो अब उनके बेटे नकली नोट बना अधिक पैसे में दिमाग खराब हो गया। इस लालच में फंस गया तो जेल में पड़ा है। फांसी की सज़ा सुना दी गई है पर अब वो पैसा उसे छुड़ा नहीं पा रहा है। तुम ऐसे पाप कर्म करते हैं कि पैसा खिलाकर अपने को छुड़ा लेंगे पर कोई भाई भी उसके नज़दीक नहीं आते, नहीं तो वो भी फंस जाएंगे। और उन्हें फांसी मिल जाती है। Black marketing के कारण फंसा पर उसे अब माफ़ी भी नहीं मिल रही है। एक क्लर्क ने सबूत पेश करके उसे फंसाया। नज़दीकी मनुष्य ही उसे फंसा देते हैं।

एक व्यक्ति विलायत गया वहां नाई का काम करके पैसा कमा के आया। उसे एक pretender रोज़ धमकी देके उससे पैसा वसूल करता था। एक दिन उन्होंने कहा कि ये सच है कि मैंने नाई का काम करके कमाया है तो अगला व्यक्ति भाग गया। अपने नौकरों से ही फंसता है। जो तुम्हारे पाप को जानते हैं। पैसे के लिए तुम दुश्मन बनाते हैं। मन ही खराब है

जो बड़े होने की इच्छा रखते हैं। मन अमन हो जाए यही शांति है। बुढ़ापे में भी पैसा काम में नहीं आता। माया किसी को भी आराम करने नहीं देती।

इश्क़ ही ambassador है। एक ही भगवान की चाह है तो तुम्हारी जीत अवश्य होगी। मर्द सत्संग में कम आते हैं। और तुम भगवान के लिए प्यासे हैं तो अगन लगाओ तो पहुंच जाओगे। क्यों नहीं मिलेगा, जब तुम्हारे अंदर ही है। भगवान को ढूंढना नहीं है। वो छोटा बच्चा नहीं है, जो तुम ढूंढने जाते हैं। अंदर में ही तुम्हें मिलेगा। तुम खुश हो जाओ। भगवान आज तुमसे बात करेगा। यहां तुम आते हैं तुम अपने अंदर में देखो। घट में ही जमुना, घट में ही गंगा। तुम्हें अपने अंदर में ही मिलेगा। वहीं है, तुम पर्दा उठाओ। आवाज़ देके प्रभु ना बुलाओ। You are that. अहम ब्रह्मस्मई तत्वमसी। अर्जुन को विराट रूप दिखाया कि मैं कहां नहीं हूं। ये सब मैं ही बना हूं। पत्थर, जड़, चेतन मैं ही हूं। कर्ता तो करतार है। सारी दुनिया उसने पैदा की है। तुम अपने को कर्ता नहीं द्दष्टा समझो। भूले मार्ग जिसने बतलाया, ऐसा गुरु वडभागी पाया। उपजे चाह, साध के संग। गुरु बिन घोर अंधकार। दुनिया को भगवान ही चला रहा है। सो साहिब चिंता करे, जिस उपाया जग। नानक कारणा जिन किया, तिन्ही करनी सार। चाह गई चिंता मिटी, मन हुआ बेपरवाह। जिस

जीव को चाह नहीं, वो शाहों का शाह। दया धर्म का मूल है, नरक मूल अभिमान। अहंकार से कर्म नहीं करना। जब तुम्हें प्यार है तो उसे भी प्यार है। फकत कर इश्क़ में ऐसा असर, अरे आशिक़, जो हुस्न भी तेरे क़दमों में आकर गिरे (भगवान भी आशिक़ है)। प्रीतम जान लेहु मन मांही। मन में ही भगवान है। मन को अमन बनाओ। एक लाइन में पूरा अर्थ है।

"सत्गुरु सिख की आत्मा, सिख सत्गुरु की देह"।

दादा भगवान पत्र संख्या - 1

एक बार एक व्यक्ति ने विवेकानंद से पूछा, आप शादी क्यों नहीं कर रहे और उसका आनंद क्यों नहीं ले रहे हैं? विवेकानंद ने कहा कि मैंने संतरे का सारा रस (आनंद) पिया है और दुनिया के पास तो उसका छिलका ही है। दुनिया के लोग सोचते हैं कि वे खुश हैं लेकिन ज्ञानी ने वास्तविक आनंद प्राप्त कर लिया है। जब भी आप खुश होते हैं, तो आप निश्चित रूप से भगवान होते हैं, यदि आप पैदा होते हैं तो आप मर जाएंगे, लेकिन ब्रह्मज्ञानी के घर में हमेशा आनंद होता है। इस ज्ञान के बाद आपको मन की स्थायी शांति मिलेगी। जिस किसी को भी आत्मा की यह आँख मिल जाती है वह आत्मा ही देखता है। चींटी में भी और हाथी में भी वह आत्मा को ही देखता है। क्या आप पूरी दुनिया में आत्मा देखते हैं? आत्मा को जानो। ईश्वर जो कुछ करता है, उससे खुश रहो। सब कुछ भगवान पर छोड़ दो। कुछ भी इच्छा मत करो। गुरु जो कुछ भी करता है, तुम्हारे अच्छे के लिए ही करता है। गुरु तुम्हारे भीतर है। अपने सतगुरु की आज्ञा का पालन करो तब तुम हमेशा प्रसन्न रहोगे। दुनिया के लोगों की खुशी शर्तों पर आधारित है लेकिन ज्ञानी आनंद स्वरूप है। यह आनंद कभी जाता आता नहीं है। ज्ञान के बाद आपको भी ऐसा होना चाहिए। आप

अपने असली स्वरूप को भूल गए हैं। जब आप अपने स्वरूप को महसूस करते हैं, तो आप सभी इच्छाओं से ऊपर होंगे।

DADA BHAGWAN LETTER NO. - 1

Once a man asked Vivekananda, “Why aren't you getting married and enjoying yourself?” Vivekananda said that like an orange I have drank all the juice(ananda) and the world is having the skin of orange. The people of the world think they are happy but Gyani has attained real ananda. Whenever you are happy, you are sure to be God, if you are born you shall die but in Brahmgyani's state there is always ananda. After this gyan you shall find permanent peace of mind. Whosoever gets this eye of Aatma sees Aatma in all. Even in ant and elephant he sees Aatma. Do you see Aatma in the whole world? Know Thyself. Be happy with whatever God does. Leave everything upto God.

Don't desire anything. Whatever Guru does he does for your own good. Guru is within you. Obey your Satguru then you shall live ever happily. The happiness of people of the world is based on conditions but Gyani is Anand Swaroop. This anand never goes and comes. After the gyan you should also be like that. You have forgotten your real self. When you realise yourself, you shall be above all desires.

गीता भगवान पत्र संख्या - 2

You Are Exactly Like Me

तुम्हारा प्रेम पत्र निश्छल प्यार और सरलता का प्रतीक, आज ही मिला, पढ़कर बहुत खुशी हुई। अचानक हृदय में संकल्प आया कि तुम्हारा तो जीवन ही सुनहरा बन जाएगा। जहां सारी दुनिया दुखों की लू में झुलस रही है वहां तुम्हारे लिए तो गुरु ने शांति रूपी एयर कंडीशनर बना दिया है। अब दुख तुम्हें छू भी नही पाएंगे क्योंकि तुम हर हालत में मुस्कुराओगे। हर हालत प्रभु की ओर से आयी हुई समझोगे। प्रभु की ओर से जो भी मिला सब मीठा फल है अगर उसे सावधानी से चखो। दुख और सुख दोनों को प्रसाद करके जानो तो तुम उसमे डूबोगे नहीं - सब है प्रभु की अमानत -

“चाहे सुख डी, चाहे दुख डी

मुखे सब कुछ तुहिजों मंज़ूर आ"

“चाहे सुख दे, चाहे दुख दे

मुझे सब कुछ तेरा मंज़ूर है"

Adjust your will with the will of God. एक बार राजा अकबर ने बीरबल से पूछा कि दुनिया में लोग गिरे हुए को क्यों गिराते हैं?

बीरबल ने कहा - अच्छे समय पर आपको बता दूंगा। एक दिन दोनों सैर करने को निकले, चलते - चलते राजा बहुत थक गए और उनको प्यास लगी। राजा बोले मेरे को कुछ दो तो मैं उसके ऊपर बैठूं। सामने एक पक्का कुंआ था - बीरबल ने कोशिश की पर ईंट निकाल नहीं पाया, क्योंकि मुंडेर बहुत पक्की थी। थोड़ा आगे चले तो एक कच्चा कुंआ मिला - उसकी मुंडेर कच्ची बनी थी तो बीरबल ने झट से एक ईंट निकाली और राजा को दे दी। फिर बताया कि राजन आपने तो प्रत्यक्ष देख लिया कि पक्के कुएं से ईंट नहीं निकल पाई पर कच्चे कुएं से एक मिनट में कोई बच्चा भी ईंट निकाल सकता था। सिद्धांत यह है कि अगर तुम पक्के हो अपने इरादे में, विल पॉवर (Will Power) वाले हो, तो कोई भी तुम्हें अपने निश्चय से डिगा नहीं सकता। पर अगर तुम ही मुल्तानी राम हो (जिधर धक्का दिया उधर लुढ़क गए) तो सभी तरह - तरह की बातें करके तुम्हें गिरा देंगे, दासी पुत्र बना देंगे - पर तुम हो सूर्य पुत्र बलवान शक्तिशाली। तुम्हारे जैसा न कोई हुआ न कोई होगा। अपनी खुनकी रखो, कि मैं क्या नहीं हूं - You are son of God.

ये समझ तुम्हें मिली है प्यारे गुरु की कृपा से, हर समय सबका थैंक्स (Thanks) मानते चलो।

गीता भगवान पत्र संख्या - 3

शुद्ध स्वरूप परम प्रिय सदैव अपने आत्म आंनद में लीन रहो। आप लोगों का न्यू ईयर ग्रीटिंग कार्ड (New year greeting card) मिला था। उसके रिप्लाइ (Reply) में यहां से हम लोगों ने पत्र लिखा था। प्रिय तुम्हारे पत्र से यह लगा कि शायद हमारा पत्र तुमको नहीं मिला है। हो सकता है शायद अब तक मिल गया हो। तुम बॉम्बे (Bombay) से मौज करके पहुंच गए होंगे, अपने निज घर में। आज एक दादा भगवान की पॉइंट पढ़ रहे थे कि अगर तुम किसी बगीचे से फूल तोड़ोगे तो माली की मार खाओगे और अगर तुम वहां शांति से बैठे हो और माली स्वयं तुम्हें एक गुलदस्ता बना कर भेंट करे तो तुम्हें कितनी खुशी होगी। इस जगत रूपी बगीचे में आकर कुछ न कुछ प्रभु से मांगते ही रहते हैं या प्रभु की अमानत को चोरी करके अपना समझते हैं तो सारी ज़िन्दगी दुखी सुखी होते हैं। प्रभु की ओर से कुछ मिलता भी है तो भी उन्हें सच्ची खुशी नहीं आती क्योंकि उन्हें लगता है कि जैसे ज़बरदस्ती कुछ मांग लिया है। सहज मिला सो दूध बराबर, मांग लिया सो पानी और खींच लिया सो खून बराबर। भक्त तो होता है निरिच्छा किसी भी पदार्थ की मांग या चाह उसको नहीं है फिर भी भगवान की तरफ से उसे सब कुछ मिलता है। उसे तृप्ति का भी एहसास रहता है। ध्रुव ने भगवान की तपस्या की, प्रभु

प्रसन्न हुए, और ध्रुव को वरदान दिया कि तुम हज़ार वर्ष पृथ्वीलोक का राज्य सुख भोग के फिर मेरे लोक में आना। मैं तुमको अटल पदवी दूंगा। तपस्या करते - करते ध्रुव का मन निर्मल हो गया था। अतः उसने कहा भगवान मुझे आपका दर्शन मिल गया अब मुझे किसी भी बात की आकांक्षा नहीं है। पर भगवान ने बोला कि मैं अपने भक्त को लौकिक और परलौकिक सुख देने को बाध्य हूं। जिसको इच्छा नहीं है सारी प्रकृति उसे सुख देने को तरसती है।

प्रेम तो सभी करते हैं लेकिन निभाना किसी विरले को ही आता है। प्रेम हमेशा बढ़ता रहे दूज के चंद्रमा की भांति।

गीता भगवान पत्र संख्या - 4

सच्चिदानंद सत्य स्वरूप,

गुरु के बंधन में भी मस्ती है और संसार वाले आज़ादी देते हैं उसमे भी बंधन है क्योंकि मन से मुक्ति नहीं मिली।

आँख की पुतली इतनी छोटी है फिर भी इतना विशाल आकाश हमें दिखता है - ऐसे ही भगवान इस देह में भी ओत प्रोत है। कितनी बड़ी पहेली है कि भगवान है हमारे पास और ढूंढ़ रहे थे बाहर। भगवान तेरे पास में है तो तुम्हे कोई नहीं हरा सकता है, ये विश्वास रखो।

गोपियों को कृष्ण से अथाह प्रेम था, उन्हें ज्ञान सीखने की ज़रूरत ही नही पड़ी बल्कि उधव जो ज्ञानी था उसे भी प्रेम सिखा दिया। हिल स्टेशन पर जाते ही ठंडक मिलती है इसी तरह गुरु के मिलने से स्वतः ही आनंद मिलता है। हम इस आनंद को बढ़ाते जाएं। ये मत बोलो हमें पुरानी बातें भुलानी हैं पर इस राह पर केवल आगे बढ़ते चलो।

जहां जाओ भगवान की रट लगाओ उस बच्चे की तरह वो जो नया सीखता है बोलना, तो उसी की रट लगाता है बार - बार।

ज्ञानी किसी भी वस्तु या व्यक्ति के बिना रह सकता है। जो इस शरीर के लिए आवश्यक होगा, वो प्रकृति तुम्हें देगी। इसके लिए तुम्हें कुछ भी

सोचने की आवश्यकता नहीं है। ये सोचने से अच्छा है तुम प्रभु का चिंतन करो। जीवन की कश्तियां चलती रहेंगी, उनका संचालक भगवान है। वो सारी प्रकृति को हमारे शरीर सहित चला रहा है।

सारे पदार्थ जड़ चाहे चेतन तुम्हारे पास भगवान की अमानत है, उसमे ख़यानत नहीं करो। अंदर से ही माया रहित होते जाओ। अपने अंदर से करना, अक्षर ही निकाल दो - हर काम एक्सरसाइज है। आजकल डॉक्टर दवा से ज़्यादा एक्सरसाइज बताते हैं सो वो हो रही है, तुम काम कर ही नहीं रहे हो। बच्चे गुड्डे गुड़िया की शादी भी कराते हैं तो प्रेम से, पर तुम वो शादी कराते - कराते थककर चूर हो जाते हो। अपने को सहज छोड़ दो जहां रब ले जाए, चलता चल। पर तुम सोचते हो तो मन भी थकता है, शरीर भी थकता है।

तुम प्रकृति के अनुसार चलो तो जीवन में हल्कापन आ जाएगा। गुरु हर बात को मिथ्या भाव से सुनता है। तो हम भी हर बात की हस्ती को मिटा दें। सारे विश्व से लेखा जोखा खत्म करते जाएं ज्ञान द्वारा। पैदा हुए तो कुछ लाए नहीं, जाएंगे तो कुछ लेकर नहीं जाएंगे - बीच में इतना बड़ा झमेला क्यों खड़ा करते हैं।

तुम्हें जो पसंद नहीं है वो तुम नही करो, अगले को तुम नहीं रोक सकते हो। तुम अपनी आत्मा की शान में रहो। दूसरों के स्वभाव से दुखी होते हो तो समझ लेना तुम स्वभाव, संस्कारों से मुक्त नहीं हुए हो।

गीता भगवान पत्र संख्या - 5

सत् चित् आनंद मम रूप....

सदा अपनी आत्म मस्ती में मस्त, आपका भाव वाला और अति शुक्रानों से भरपूर पत्र मिला। इतनी सरलता से आपने अपने भाव व्यक्त किए हैं - दिल को छू गए। अब तो भगवान हम सबके दिलों में समा गए हैं - उन्हीं के आदर्श की पहरवी, उनकी याद दिल में समाए। अब तो और ज़्यादा कार्यशील होना है। अब तो सच में लगता है कि गुरु की कितनी अनंत महिमा है, जो पहले दिन से आगाह करके देह में कभी नहीं अटकाया। बाकी विशेष रूप की महिमा तो सदा ही है। निराकार साकार होकर आए फिर हुए अन्तर्ध्यान। ब्रह्मज्ञानी की जुगा जुग अमर है आत्मा। ज्ञानी को क्या रोइए जो घर अपने जाए, बाकी प्रेम के आंसू तो सदा दीद को भिगाए रखते हैं। अब तो उनकी प्रेरणा मार्गदर्शक बनकर राहें रौशन करेंगी। पहले से भी और ज़्यादा अनुभव, गंभीरता, मौन और प्रेममय (अंदर ही अंदर न जाने गुरु क्या भर रहे हैं)। कुर्बानी वाला मिठास भरा जीवन, ये एहसास तो नित प्रतिदिन बढ़ता ही रहेगा। गुरु साकार रूप में विराजमान है तो एक राजकुमार वाली खुनकी रहती है। पर अब समय की मांग है कि गुरु का कार्य, उनसे किया हर वादा अब प्रेम पूर्वक निभाएं। सारा काम वो ही कर रहे हैं पर ये एहसास और ज़्यादा थमाते हैं। वैराग्य

नित प्रतिदिन अब बढ़ता ही रहेगा। अब तो शुक्रानोमय जीवन के मायने और भी गहरे होते चले जाएंगे, बस जो नैन बाहर खोजते आए हैं अब वे पूर्ण रूप से भीतर हैं। गुरु सदा है ही है। ज्ञानी त रेहंदा ज्ञान में ईंदा न देह अभिमान में। प्रेम वाला दूर हो नहीं सकता, प्रेम में देरी और दूरी है ही नहीं। Guru can be known, not defined. गुरु को जाना जा सकता है, पर उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है, जैसे गूंगा गुड़ खाता है वह भीतर ही उसकी मिठास जानता है पर असमर्थ है कुछ कहने में, ऐसे ही गुरु है भगवान वह अवर्णनीय है। गुरु है मेरा अपना आप, उसको जाना जा सकता है पर उनके बारे में वाणी कुछ भी वर्णन नहीं कर सकती।

“वाणी न करे सघंदी मुहिजो कदिही भी वर्णन।

सत्गुरु आहें मूहिजो आत्म।।"

"शास्त्र नहीं बता पाए मुझे मैं कौन था।

गुरु आया तो उसने बताया तू आत्म स्वरूप है।"

“One without second." यही आदर्श अंदर वाले को पिघलाता है। आत्म ज्ञान का इतना प्रभाव है कि दुख, बीमारी और मौत तीनों ही संताप नहीं करते हैं। भगवान जी कई बार कहते कि “हम लाए हैं

ब्रह्माकार वृत्ति गुरु द्वार से, इस वृत्ति को रखना मेरे मनवा संभाल के"। ये अगर भजन में लाइन कही है तो इसका गहरा अर्थ है, केवल और केवल ब्रह्माकार वृत्ति गुरु ही देते हैं। सच्चे सत्गुरु ही ये रहमत बख्शते हैं और नम्रता से कहते हैं तुमने मुझे निर्भार किया अपनी अमानत लेकर। मायाकार वृत्ति हर एक पक्की करता है पर सच्चे गुरु को ही एहसास है कि गर्भ की पीड़ा क्या है, इसलिए उनकी अमृत वर्षा होती रहती है। केवल एक ब्रह्म नाद बजता रहता है जिससे सारे कलुष जन्मों की तपत से आराम मिलता है। जिस साइलेंस (Silence) के क्षेत्र की ओर गुरु इशारा करते हैं उसमें लीन हो जाएं। रोज़ का सत्संग यही तो कमाल करता है और ज़्यादा मौन, और गुम, और गुम। मौन में ही सारा सार समाया है। जितनी ज़्यादा मौन (मन की मौन, चुप नहीं) उतनी प्रेम की मिठास। करना भी कुछ नहीं पड़ा केवल ब्रह्मज्ञानी के वचनों की पहरवी, उनका होना ही काफ़ी है। करने जाते तो कुछ नहीं होता सब उनकी ही मेहरबानी है। यही है सच ब्रह्म ही ब्रह्म हर जगह समाया, तिसे बिना कुछ नज़र न आया। जो योगी, ऋषि, मुनि, तपस्वियों ने दुर्लभ बताया वो बड़े दादा भगवान, गीता भगवान और माता भगवान ने इतना सरल कर दर्शाया। बाक़ी ये सच है, पहरवी कीजे परहेज़ गारों की। हर क्षण अपनी खुशबू फैलाकर सारी हवाएं गुरु के होनेपने का ताज़ा संदेश दे रहीं है,

शांति में। जो सुने वो तो आनंद की गहराइयों को छूता ही चला जाता है। बहुत शुक्राने आपने सेवा का मौका दिया, सबको बहुत प्यार।

गीता भगवान पत्र संख्या - 6

सत् चित् आनंद स्वरूप.....

अपनी मौज मस्ती में मस्त रहने वाली। प्रिय आपका पत्र मिला जिसमें बच्चों की शादी के बारे में लिखा था। पढ़कर खुशी हुई, ऐसा ही लग रहा था कि जैसे आप हमारे बच्चों की शादी करवा रहे हैं, क्योंकि न हम आपसे जुदा हैं, न आप हमसे जुदा हैं। बच्चों को शादी के समय हम लोग यहां से ही ज़रूर आशीर्वाद देंगे। सिर्फ आप हर रूप में प्रभु की झलक का दीदार करना। आपका भी आशीर्वाद उनके ऊपर है ही है। परमात्मा हज़ार हाथों वाला हर रूप में खड़ा ही होता है। वह एक सेकंड (Second) भी हम लोगों से जुदा नहीं है। गीता में भी भगवान कृष्ण ने कहा है, हे अर्जुन मेरे कर्म दिव्य, मेरे जन्म दिव्य हैं जिसको मैं जान सकता हूं, तू नहीं। मेरे कर्म दिव्य माना दुनिया वालों से ऊपर कर्म हैं। दुनिया वाले कर्म करते हैं उसमें फल की इच्छा, स्वार्थ, बदला छिपा होता है। परन्तु मेरे कर्म में फल की इच्छा, स्वार्थ नहीं है, निष्कामी है। अगर मैं अर्जुन से लड़ाई करवाता हूं या युधिष्ठिर से झूठ बुलवाया तो इसमें मेरा निज कोई स्वार्थ नहीं है, लेकिन शरणागत (अर्जुन) की रक्षा करना मेरा धर्म है। मैं पापियों का नाश करने के लिए ही अवतार लेता हूं। मेरा जन्म दिव्य माना मेरे कई जन्म हैं जिसको मैं ही जान सकता हूं। मैं अलौकिक शक्ति से पैदा हुआ

हूं भले देखने में देवकी के गर्भ से आया परन्तु मैं स्वयं पैदा अपने आप से हुआ हूं। इस जन्म के पहले कोई मेरे संचित कर्म नहीं थे जिसको मैं अभी पूरा करूंगा और ना ही अभी मैं कोई कर्म अपने स्वार्थ से करता हूं जिसका फल निकलेगा और मैं दूसरे जन्म में भोगूंगा। ये सब मुझमें कर्म, फल नहीं है। परंतु साधारण व्यक्ति कर्म करते हैं और फल भोगते हैं। परन्तु जब साधारण व्यक्ति में ये चाह है कि मुझे मोक्ष प्राप्त करना है तो वह ज्ञान की अग्नि में संचित कर्म जलावे तथा नए कर्मो पर स्टॉप (Stop) कर दे तो उसका खाता खलास हो जाए। ज्ञानी २४ घंटे अपनी आत्मा में सजग रहता है। सजग होने के कारण ही उसके ९ के ९ द्वारों में प्रकाश रहता है, दो आंखें, दो कान, दो नासिका, एक मुख, एक गुदा, एक लिंग। वह हर इंद्री से राम का रस लेता है। आंखों से राम का दीदार करता है, कानों से राम की वाणी सुनता है, मुख से परमात्मा की वाणी का उच्चारण करता है। गुदा लिंग भी अभी विषय रस के लिए नहीं परन्तु शांत परमात्मा में लीन हो जाती हैं। जब सभी इन्द्रियों में पर्मात्मरस हो जाता है तभी दसवा द्वार माना विवेक जाग्रत होता है। निराकार ने ९ द्वार दिए परन्तु गुरु हमें दसवें द्वार का दीदार करवाता है। विवेक जाग्रत होने से कोई भी कर्म का फल नहीं प्राप्त होता है। कर्म के बिना तो कोई एक मिनट भी नहीं रह सकता है लेकिन, पके दाने के समान फल दायक नहीं होता है। मनुष्य

जूनी में ही हम परमात्मा को पा सकते हैं क्योंकि देवताओं का जन्म सुख भोगने के लिए होता है जैसे इन्द्र सुखों में मतवाला था, खुद से तृप्त नहीं था, अहिल्या पर आशिक हुआ। लेकिन मनुष्य सुखों से तृप्त होकर परमात्मा पा सकता है। नीच योनियों में तो परमात्मा को नहीं पा सकते हैं।

गीता भगवान पत्र संख्या - 7

सत् चित् आनंद स्वरूप...

प्रिय जकार्ता वासी, हमेशा अपनी ख़ुदा मस्ती में मस्त रहने वाले पत्र मिला पढ़कर खुशी हुई। दादा निराकार से साकार होके आया फिर साकार से निराकार हो लीन हो गया। उसने बोला उमंग अपने में आकर मैं खुद ही आदम हुआ, फिर उमंग अपने में आकर मैं स्वरूप में से अरूप हो जाऊं। अभी कौन कहे साहिब को.....स्वतंत्र भगवान है। बाहर से अन्तर्ध्यान है पर सबमें समा गया है। दादा से कोई पूछते थे कि दादा तुम लोग भी तो शरीर छोड़ेंगे तो दादा ने कहा, मैं तो अभी भी शरीर नहीं हूं तो छोड़ूंगा क्या? शरीर जभी छोड़ा तभी तो खुद ख़ुदा हुआ। मंगन मुआ तो खुद ख़ुदा हुआ। है ही लीला, भगवान अनेक लीला करके सबको पक्का किया है।

सर्प अपनी खाल अपनी मर्ज़ी से उतार देता है। ज्ञानी को क्या रोइए जो गृह अपने जाए, रोइए....। दादा अपने असली घर में विराजमान है। कहां भी गया नहीं है।

आहे - आहे सजण मुहिंजो आहे, मां कींय चवा हूं नाहे।

है है भगवान है मेरे लिए, मैं कैसे कहूं कि वो नहीं है।

ये कमाल करके दिखाया, जो मेरे से भी छिपा के मेरे को निश्चय, विश्वास, शक्ति, हिम्मत दिया है जो अभी लीला देखते हुए भी झटका नहीं आया है। लीला को लीला ही करके देखना। ऐसे देखा जैसे कुछ हुआ ही नहीं है। यही वर दादा से ज़िन्दगी में एक बार मांगा था कि तुम कैसी भी लीला करो पर मैं तुम्हारी लीला में ना जाकर तुमको वो ही निराकार भगवान देखूं और ऐसा ही हुआ कि शरीर में कैसी भी तकलीफ़ हुई तो समझ में आया वो भोक्ता नहीं है। हम सबको सीखाने के लिए शरीर को भोगाया कि देखो मैं कैसे दुख - सुख में अडोल आत्मा शिवोहम हूं। सुखों में तो उनको सबने देखा और शंकाएं लाईं तो ये सूट पहनता है, लड़कियों के साथ बैठता है, घूमते हैं, फिरते हैं, इतने सारे भगत सेवा के लिए हाज़िर हैं, भई ये तो ऐश मंडली है, इन लोगों ने बाक़ी त्याग क्या किया है? तो इन लोगों की शंकाओं को दूर करने के लिए, भगवान ने अपने शरीर को भारी से भारी कष्ट दिया। भारी से भारी कष्ट में भी वह, भगवान और शिवोहम के नारे लगा के दिखाया।

सुख - दुख जाके परसे नहीं,

वो मूरत भगवान।

अन्तिम लीला तो देखने जैसी थी। लखनऊ जैसे तीर्थ स्थान हो गया। आठ दिन लखनऊ में शरीर को श्वांस की तकलीफ़ थी तो बात करना, बोलना सब बंद था, पर अंदर की सुजागी ज़बरदस्त थी। ओम् शिवोहम के सिवाय दूसरी कोई बात नहीं। जिन लोगों ने ये स्थिति देखी तो खुद शरीर से ऊपर हो गए। दादा को श्वांस की तकलीफ़ बॉम्बे में ही शुरू हो गई थी। डॉक्टर ने मना की, ट्रैवल (Travel) ना करे। बॉम्बे वालों ने रोका भी तो दादा ने बोला, मेरे को रोको नहीं मैं भगवान हूं, मैं स्वतंत्र हूं, मुझे खुशी से छोड़ो, मुझे लखनऊ और रुद्रपुर की धरती पुकार रही है। लखनऊ में आठ दिन रहकर डॉक्टर माखीजानी रुद्रपुर को, जो नैनीताल के नीचे छोटा गांव है, वहां ले गया क्योंकि डॉक्टर का ट्रांसफर (Transfer) उधर हो गया था। उसी गांव में छुपे हुए भगत बैठे थे। उन लोगों ने बहुत फायदा लिया बोला हम लोगों के लिए ही भगवान इधर आया है, पर रुद्रपुर की हवा उनको सूट (Suit) नहीं की उधर सांस की तकलीफ़ बढ़ गई। डॉक्टर माखीजानी ने रात दिन एक करके दवा और आराम करवाया लेकिन फ़ायदा नहीं पड़ा। इसलिए जल्दी लखनऊ के रास्ते बॉम्बे आने वाले थे पर लखनऊ में उतरने से ही तकलीफ़ बढ़ गई। बड़े बड़े डॉक्टर भी आए, ऑक्सीजन (Oxygen) और ग्लूकोज (Glucose) भी चढ़ाया गया, पर डॉक्टरों के हाथ में भी क्या है? वो

कैसे भगवान को पहचानेंगे जो ये लीला कर रहा है। इन लोगों ने अपनी कोशिश करी पर दादा ने डॉक्टरों को बोला कि, तू मेरा डॉक्टर नहीं है, याद रखना मैं तेरा डॉक्टर हूं। एक दिन बेहोशी में से उठकर पांच मिनट बात किया कि ये मेरी हिम्मत देखो, मैं कहीं आता जाता नहीं हूं। मैं oneness, sameness में हूं। मैं जहां तहां हूं। हम लोग सबने ठहाका देके हंसा, खुद भी हंसा। हम सबको देखा किसी का मुंह छोटा तो नहीं है। लेकिन हम लोग सब अडोल थे, तो ये देखकर बहुत खुश हुआ। रुद्रपुर में भी एक दिन तीन बजे उठकर गीता का अर्थ सुनाया। दो घंटा बात किया जो टेप में भरा है। मतलब क्या लिखकर क्या लिखें। सत्गुरु कमाल हो, दादा.....। पछाड़ी को फकत एक आवाज़ हुआ और शरीर एकदम शांत हो गया। हम सब अडोल खड़े थे। ओम् की अखंड ध्वनि लग रही थी कि अपने को पहचानने आया सो भली आया। कम न ब्यों सैर करण हिते आयो सो भली आयो।

इन्हीं भजनों से सबने विदाई दी। लक्ष्मी भगवान की उस समय शेर शिवोहम की गर्जना देखने लायक थी। जो भी रोते हुए आया वो हंसते हुए गया। वाह वाह के गीत गाने लगा। चौबीस घंटे बर्फ़ पर शरीर रखा गया वो दृष्य किसी से भी भूलने जैसा नहीं है। बिल्कुल जैसे समाधि में और गहरी नींद में शरीर सोया हुआ था। चौबीस घंटे बिल्कुल फ्रेश

(Fresh)। सभी शहरों से बारात आई थी। जैसे शादी हुई हो। खूब श्रृंगार किया। हार, फूल, इत्र, सुगंध और सिंदूर डाल के कामिल घोट बन गया। जैसे दूल्हा घोड़ी पर चढ़ा और सब लीन हो गए। लक्ष्मी भगवान ने सबका रोना बंद कर दिया कि असल कोई आंख से एक आंसू ना बहाए, क्योंकि दादा ने बोला था कि हमेशा मेरी तरह जग में ख़ुश आबाद रहो और प्रफुल्लित रहो। अशोक रहना हमारा धर्म है। उसने तो सब कुछ दिया। सबको सच्ची राजाई दी है। वो तुम लोगों का क्या लेके गया है जो रोते हो। सच्चा प्रेम उसको बोलते हैं जो ज़्यादा में ज़्यादा प्रेम भी करे और छोड़ने की भी शक्ति हो।

आज भी हमारा दादा है, लक्ष्मी के रूप में हम लोगों के साथ है। हम लोगों को आज भी कोई कमी नहीं है। पहले से भी ज़्यादा सत्संग, ज़ोर शोर से वही वाणी चल रही है। वही प्यार, वही हिम्मत सब कुछ मिल गया है। दूसरे गुरु जब शरीर छोड़ते हैं तो उनके शिष्य सब ख़ाली, दुखी और अकेला बेसहारा हो जाते हैं। पीछे से कोई भी आप समान नहीं बनाते हैं, जो सबका गुरु जैसा प्यार जगाए। इधर तो दादा ने बोला एक को लाख से लड़ाऊं तो मैं गोबिंद सिंह कहाउंगा। ऐसे ही एक लक्ष्मी हमारे लिए है जो लाखों के दिल भर दिए। हम लोग भी भावना रखें कि वही शब्द सेम (Same) आ रहा हैं, दो है ही नहीं। दो दीए हैं पर ज्योत एक

है। हम लोगों को पानी पीके प्यास बुझानी है। फिर वो पानी शेर के मुख से निकले या गाय के मुख से पर आता तो आसमान से ही है। गाय के सारे शरीर में दूध है, पर मिलता तो एक जगह से ही है। ऐसे ही दादा सबमें समा गया है, पर निराकार की वाणी आज भी लक्ष्मी के मुख से ज़ोर शोर से निकल रही है। सब हैरान हो गए हैं कि ये तो पहले से भी सत्संग ज़ोर से लगा पड़ा है। कोई भी कमी नहीं महसूस होती। हम लोग हमेशा फ़ायदे में हैं। दादा हमारे में ओत प्रोत समाया हुआ है। सबको अमानत मिल चुकी है अपनी और मिल रही है। कोई भी फर्क नहीं पड़ा है। वही पलंग वही सब चीजें जगह पर पड़ी हुई हैं, पर वो असल जहां तहां समाया, हाज़रा हुज़ूर है, ऐसा देखने में आया है।

लक्ष्मी भगवान की हिम्मत से आज पूरा सत्संग बहुत चमक रहा है, खुश हैं सब। सबको हिम्मत शक्ति आ गई है। नहीं तो ऐसे भारी दुख में परीक्षा देने की किसी में भी शक्ति नहीं थी। ख्याल करने से ही जैसे गम का पहाड़ उंगली पे उठाके सबको हल्का कर दिया है, जैसे कुछ हुआ ही नहीं है। ब्रह्मज्ञानी के घर सदा आनंद।

दादा की सेवा में रात दिन नारायणी, मीरा, शांता के रूप में भगवान थे, वो भी सब अडोल बैठे थे। शांता तो फक्र से कह रही थी कि दादा मुझको बीमारी में अकेले में कान में सुना कर गया है, कि तुम साक्षात भगवान

हो। किसी से भी कम नहीं हो। बस मैंने यही निश्चय किया है जो दादा है सो मैं हूं फिर शोक क्यों करूं? धन्य है वो प्रेमी, जिसने अपनी जीवन जवानी में सच्चे गुरु की सेवा में अर्पण करी। उन लोगों को ही आज अमर जीवन मिली है। और उसमें ही दादा की कमालियत का पता पड़ता है। दुनिया में गुरुओं को एक भी सच्चा भगत नहीं मिला, वो रो रहे हैं पर इधर भक्तों की भीड़ आकर इकठ्ठी हुई है। भीड़ लगी है एक एक लाड में डूब रहा है कि मेरे को दादा ने ज़्यादा में ज़्यादा प्यार किया है। मैं हूं खुद भगवान उसमें ना है शक गुमान। गोप और जकार्ता वासियों का टेलीग्राम मिला है, वो बहुत अच्छा समझ वाला है। सबने पढ़ा और तुम लोगों के प्रेम और विश्वास को समझा। सराहा की दादा को कितना पहचाना है कि वो गया नहीं है, एक ज्योत करोड़ों में समा गई है। तुम लोग भी सब उधर अशोक पद में स्थिर रहना। दादा हमारे अंदर बाहर है। अंदर बैठे सत्गुरु आप, अंदर ज्योत जग दी। हम लोग सब दादा के बताए निश्चय में अमरता के आनंद में रहकर सबके प्यार में, सबकी सेवा में दादा की तरह अपनी जीवन सफल करें। यही दादा का पैग़ाम है। सबके लिए प्यार।

गीता भगवान पत्र संख्या - 8

दुनिया की सारी विद्या अविद्या है। उससे केवल पेट की पालना कर सकते हैं। मनुष्य भी यदि पेट पालने वाला बने तो उसमें और हैवान में क्या फर्क हुआ। कितनी भी डिग्रियां हासिल करो मिलेगा केवल धन, वह तो पहले ही तुम्हारी प्रारब्ध है। ब्रह्म विद्या ही सच्ची विद्या है, जिससे शक्ति मिलती है। बाक़ी दुनिया की सब विद्याओं में तो शक्ति जाती है। इस ब्रह्म ज्ञान के लिए सब कुछ आखिर भुलाना पड़ेगा। भगवान के आगे यह दुनिया का ज्ञान जो भी तुम जानते हो वह काम नहीं आएगा।

मन कहता है, कि तुम बड़े सयाने हो, तुम क्या नहीं जानते हो पर गुरु आकर भूल दिखाता है, कि देखो अभी कितने भूले पड़े हो, 'हो मैं' के रोग में। कितने भी अच्छे हो, पर 'हो मैं' के रोग में तो पड़े हो। यही 'हो मैं' का रोग जन्म मरण का कीड़ा बनाएगा।

ज्ञानी अपने शरीर से अलविदा करके बैठता है। जितना तुम्हारा उसके शरीर से ताल्लुक है, उतना उसका अपने शरीर से नहीं है। उसका शरीर तुमने खरीद किया है तो तुम सोचते हो, वह तो ख्यालों से ख़ाली है। वह अपने सुख और दुख के लिए नहीं सोचता। तुम उसके लिए सोचते हो वह फिर तुम्हारे लिए सोचता है, अपने लिए नहीं। इसलिए यह सोच ना

तुम्हें, ना उसे मोह में डालेगा। इस प्रकार दोनों अपने शरीर से अलग हो जाओगे। तुम्हारे शरीर पर हक गुरु का रहे और गुरु के शरीर पर हक तुम्हारा रहे, यह सौदा करो। गुरु का सच्चा भक्त वही है, जो उसे देह ना समझे पर भगवान समझे। शरीर से ऊपर हो जाओ तो दुख असर नहीं करेगा। हक पराया नानका इस सूअर उस गाय।

गुरु कुएं में गिर गया तो उसके जिज्ञासुओं ने निकालना चाहा। गुरु ने कहा, तुम मुझे मत निकालो वरना मेरा उपदेश भय दायक हो जाएगा, गुरु इतना निरिच्छा होना चाहिए। ब्रह्मज्ञानी के लिए शिष्य, सेवक, मठ, आश्रम, मंदिर बनाना मनाई है। पाठशाला, हुनरीशाला बनाना भी मना है। आत्मा के सिवाय न कुछ बोले, न कुछ करे, न सुने। जो सेवक गुरु के ग्रह रहे, गुरु की आज्ञा मन में सहे। गुरु की तो केवल आज्ञा है कि तू आत्मा है। जिसने मानी वह आज्ञाकारी है। अच्छे आदमी से कभी खराबी नहीं मिल सकती है, अच्छाई में खराबी आ नहीं सकती। जैसे सूर्य में अंधेरा हो नहीं सकता ऐसे ही आत्मा में कभी अज्ञान नहीं आ सकता। तुम कर्तापने के अभिमान में रहते हो इससे साबित है कि अकर्ता नहीं हुए तो इसका मतलब इच्छा और स्वार्थ आता है अंदर में।

पानी में हाथ से थपेड़े लगाकर तैरना सीख जाते हैं, इसी तरह आत्मा के ज्ञान में आए हो तो सुनते सुनते विकारों को दूर करते करते आत्मा का निश्चय हो जाएगा।

कुरान में केवल मिस्र की हूरपरियों की बातें हैं। भगवान की सराहना और स्तुति लिखी हुई है, ज्ञान नहीं है। अज्ञानी कर्मों का हिसाब जाकर दूसरे जन्म में देगा पर ज्ञानी का कोई कर्म ही नहीं है। कोई वासना ही नहीं है तो जन्म कैसे लेगा। पापी को सज़ा मिलनी चाहिए। भगवान को मत कहो कि माफ़ करो बल्कि कहो कि इंसाफ करो। डॉक्टर जीजस जॉनसन ने कहा कि दुनिया में अगर डॉक्टर नहीं होते तो बीमारियां भी नहीं होती और मौत भी नहीं होती। तुम्हारा भगवान से अधिक विश्वास डॉक्टर में है।

किसी को तुम कहते हो कि तुम बीमार हो, पीले हो गए हो, तुम्हारे में खून ही नहीं है, तुम्हे चोट लगी है, यह सब अज्ञान है। तुम rest करो तो अगला ज़रूर समझेगा कि मैं बीमार हूं पर उसे कहो कि तुम बीमार हो ही नहीं।

कपड़े और खाना खाने से कोई शुद्ध नहीं होगा पर आत्मा तो पहले से ही शुद्ध है। शरीर तो है ही विकारी चाहे क्या भी खाए।

मुसलमान समझते हैं कि मक्के मदीने में जाएंगे तो शुद्ध हो जाएंगे। डॉक्टर समझता है कि मेरी दवा से ये ठीक हो जाएगा। ये दोनों ही भ्रम में बैठे हैं। डॉक्टर अगर बीमारी से छुड़ा सके तो पहले तो अपने बेटे को तो छुड़ा कर दिखाए, अपने सगे संबंधियों को तो दुख तकलीफ से छुड़ाए।

भगवान ने मनुष्य को पैदा किया अपने जैसा। तुम अपने मां बाप से पैदा नहीं हुए हो पर परमात्मा से आए हो।

अज्ञानी समझता है कि मैं मज़े में हूं अज्ञान में, पर ज्ञानी उसे सूअर और सूअरी, कुत्ते से अधिक नहीं समझता है। दुनिया में सुख तो है ही सेक्स का, जो सेक्स में और विषय विकार में पड़ा है वह अपने में खुशी समझता है पर वह पराधीन है। वह सपने में भी सुखी नहीं होगा। अविवेक के कारण वह सुख समझता है। निराकार साकार धारण करके आया है जग में। जो अपने को निराकार समझता है उसे तृप्ति है, वह कभी भी दूसरे से मज़ा नहीं लेना चाहेगा। किसी का भी गुलाम बनना नहीं चाहेगा।

भगवान और मनुष्य कभी भी जुदा होने वाले नहीं है क्योंकि एक ही हैं। Truth heals and error causes disease. भूल के कारण बीमारी आती है पर सच आत्मा में टिकने से बीमारी उतर जाती है।

गीता भगवान पत्र संख्या - 9

सत् चित् आनंद स्वरूप प्रिय मम रूप सदैव अपनी मौज में रहो।

प्रेम पत्र तुम्हारा आज मिला पढ़कर बेहद खुशी हुई। वहां सबसे अधिक आप याद करते हैं बाकी तो मुझे पहचानते भी नहीं है। फिर फिर भगवान से माया अधिक मीठी लगती है। पर मुझे तुम्हारे अलावा और कौन है, जिसको मैं याद करूं। हम भक्तों के, भक्त हमारे। पिता अपने बालक से बिछुड़कर सुख से कभी नहीं सो सकता, आप मुझे हरदम याद हो। भूलाना चाहूं तो भी नहीं भुला पाऊं। हम चाहें कहां भी हैं पर तुम्हारे पास हैं। तेरे दिल में हूं। तेरी जान हूं। तेरा अंग हूं। रोम रोम में रम रहा हूं। अब मेरी याद भुलाना तेरे हाथ में नहीं है।

मुझे कोई निर्दयी कहता है, कोई कठोर, कोई चोर, कोई ठग कह रहा है। सिर्फ आपने ही पहचाना है कि मैं क्या हूं। निर्दयी बराबर हूं, पर उनके लिए जिनको अपने ऊपर दया नहीं है। कठोर भी हूं, उनके लिए जो मुझ भगवान को दिल में ना देखकर आत्मघाती महापापी बने हैं। चोर भी हूं पर उनके लिए जो आत्मधन लूटने वाले चोर से बनकर बैठे हैं, पर समझ रहे हैं कि भगवान हमारा आनंद चोरी करके गया है, हम दुखी हैं। ठग उनके लिए हूं, जो खुद मेरी मोहिनी माया से ठगे गए हैं। अब बताओ

कि मेरा क्या कसूर है। मैं तो जो हूं वो हूं। कोई मुझे कुछ कहे कोई कुछ पर है तो सिर्फ उनके ही कर्मों में कमी। पुरुषार्थ हीन आलसी अवश्य मुझपर यही इल्ज़ाम लगाएंगे पर मैं तो हूं, नेह कलंकी अवतार। पहले भी जब मैं कृष्ण रूप में आया था तभी भी यही संकल्प किया गया था। फिर नानक, मीरा आदि के रूप में जब जब भी भगवान आते हैं तो सब नहीं पहचानते हैं। यही मेरी माया है, हे अर्जुन मेरी माया भी उतनी बड़ी है जितना बड़ा मैं हूं। पर जो सिर्फ मेरी शरण में आता है उसको मैं एकदम पार करता हूं, ये मेरा वायदा है। जिस प्रभु से नाही चारा ताको कीजै नमस्कारा। जब आखिर भी भगवान के सिवाय चारा नहीं है तो फिर क्यों ना अभी भगवान के हो जाएं।

Fully surrender करना है कि पूरा तुम्हारा हूं। पर वो कौन है जो भगवान का होना चाहता है। भोग और भगवान, पुडिंग और पुलाव दोनों चाहिए। कहां है वो सूरमा जो खुशी से ख्वाब करे। चूने का लड्डू बड़ा खूबसूरत लगता है, खुशी से हर एक खाता है पर खाकर फिर चीख पुकार करते हैं क्योंकि चूना पेट में पहुंचकर फिर अंतड़ियां फाड़ देता है। फिर हाय हाय करके हरेक मरता जाता है। सब अंत में हाथ पटकते जाते हैं। पर भाग्य वाला वो है जिसे इस जन्म में ही भगवान मिले। फिर उससे भी भाग्य वाला वो है जिसने उसको जैसा का तैसा पहचाना और फिर वह

खुद बन गया। ऐसों पर तो भगवान खुद बलिहारी जाता है। उन्हीं की तलाश में है, ब्रह्मज्ञानी को खोजे महेश्वर। पर यह यकीन मानो कि कुर्बानी और आपे को मारने के सिवाय ये मंज़िल हाथ नहीं आएगी। भगवान निराकार ने खुद को कुर्बान कर यह प्रकृति पैदा की है। खुद छिपकर बैठा है। बीज जब बिल्कुल धरती में खुद को मिटा देता है तभी वह पेड़ के रूप में प्रगट होता है। फिर तुमको फल फूल देता है। ऐसे ही भगवान ने भी कुर्बानी करके तुम्हारे लिए सब ज़रूरतें मुअईया की हैं, कि मौज लो। अब तुम भी जब आपा गंवाओ, जीते जी मरोगे तो अमरता का आनंद चखोगे। मतलब कि मिट जाओ नहीं तो मिटा दिए जाओगे।

दाहं करियों न ता दवजी वेंदा

फेरो खावो न फुरजी वेंदा।

मन की बात गुरु से करो और अपनी दिशा ठीक करो, नहीं तो "मैं" तुम्हें कंगाल कर देगा।

अह्मपणा छोड़कर ओहम् में आओ। मनुष्य का सच्चा सूर्य रूपी स्वरूप अहम भावना रूपी बादल से ढका गया है। और यह है भ्रम - यह भ्रम ही सबको नाखुश, कमज़ोर, अपूर्ण, तंग दिल - हद में बांधकर बंदर की तरह नचा रहा है। उस भ्रम में हैं चार नुख्ते। तीन नुख्ते हैं माया के सतो

- रजो - तमो ये निकाल दो बाकी रह जाएगा ब्रह्म। इसी त्रिगुणी माया से तरना है। इसी माया ने त्यागी, वैरागी सब मस्त किए। विरला ही कोई बचा गुरमुख वडभागी। जिसने जाग कर देखा अपनी आंखों से - अपने को गुरु के मुख से। "तन मन अस्सी लीन करदा सी"। सुना और निश्चय किया। सिर्फ वो ही इस माया से बच सकता है। बाकी त्यागी, वैरागी, सन्यासी, उदासी सबको माया निगल के बैठी है। क्योंकि यह सब अपने को देह समझकर भगवान की तलाश में गंगा पर, पहाड़ों पर, जंगल में भटक रहे हैं। भगवान की खोज करना ही भगवान से दूर होना है। तुम हरिद्वार हो आए, गंगा नदी की महिमा की पर अब ये बताओ कि तुम बड़े या गंगा नदी? गंगा की महिमा करने वाले भी कौन हैं? गंगा तो तुम्हारे जैसों का दर्शन करने मात्र से पवित्र हुई है। संतों और ज्ञानियों के चरण स्पर्श के लिए गंगा आयी है। शिव भगवान भी तुम हो जिसकी जटाओं से यह ज्ञान गंगा बह रही है। तुम भी गोता लगा लो। ख़ुदा के खज़ाने से खर्च ले लो। "रिम झिम बरसे अमृत धारा"। घट में ही गंगा, घट में ही जमुना, घट में ही तीरथ धाम हैं। हरी का द्वार तुम्हारा दिल है, भगवान की गद्दी का द्वार तुम्हारा दिल है। तुम्हारा मन मंदिर है। सिर्फ मन को साफ़ और पवित्र बनाओ जो भगवान को चाहिए। रेडीमेड हाउस (Readymade house) जिसमें आकर निवास करे। साफ़ हो गया

हरदम हृदय तुम्हारा फिर तुम उसके वो तुम्हारा, पर पहले तो देखा जाएगा तुम्हारी दिल तुम्हारा हृदय। सच्चे दिल पर साहिब राज़ी। जिसने अपना आपा नहीं मारा है वो परीक्षा में जल्दी फेल (Fail) हो जाता है। अपने को कुछ नहीं समझने वाला सबसे ऊपर है। सब इन्द्रियों के दरवाज़े बंद कर दो तो प्रीतम अंदर आए। अपने अंदर की कोठी में उसके साथ गुज़ारो। क्योंकि और किसी भी जगह पर दुनिया में ऐसा आनंद नहीं पाओगे जितना दिल के अंदर एकांत की कोठी में। अगर आज भी तैयार नहीं हो, मुक्त नहीं हो, समझ नहीं रहे हो तो फिर कब होंगे। कल पता नहीं किसका है। आज नहीं समझा तो मुश्किल है। दुनिया में परदेसी और मुसाफ़िर होकर रहो। जैसे कि दुनिया में तुम्हारा कोई वास्ता नहीं है।

शुक्र, सब्र, इश्क़ और अक्ल के झूले में झूलो। सच्चे इश्क़ से ही सच्ची समझ आती है। और उससे ही सब्र शुक्र आता है। जब तक समय है ऐसा खज़ाना इकट्ठा कर लो जो सदैव कायम रहता है। काम ऐसा कीजिए जो अल्लाह आप बनीजिए।

तुम्हारा सच्चा प्रेम मुझे मिल रहा है। तुम्हारी डोर मुझे खींच रही है। वायदा किया है तो ज़रूर निभाऊंगा, विश्वास करो। और सब मौज में।

गीता भगवान पत्र संख्या - 10

अति सूक्ष्म

अति सूक्ष्म को कोई कितनी भी होशियारियां करे तो नहीं जान सकेंगे, क्योंकि आत्मा सूक्ष्म है। आत्मा जो सूक्ष्म ते अति सूक्ष्म है उसको तुम मन, बुद्धि, चतुराई, होशियारी, दुनिया की विद्या और धन से नहीं जान सकेंगे। अति को नहीं जानेगा चाहे कोई कितनी होशियारी करे क्योंकि आत्मा सत्य है। आत्मा अति परे ते परे है। मन, बुद्धि, वाणी सबसे अति परे है। जो इस अति सूक्ष्म को जानता है उसको कोई हालत टच (Touch)नहीं कर सकती है। मनुष्य निंदा स्तुति में पड़ा है पर वह इतना सूक्ष्म में पहुंच जाता है जो निंदा, स्तुति, कामिनी, कीर्ति उसको चलायमान नहीं करेंगी। तुम बताओ वह कैसे मिलेगा क्योंकि तुम तो सबको ठगते हैं बच्चे को, स्त्री को, दुनिया को, ग्राहक को तो वो ठगी है, नहीं मिलेगा। तुम अपनी आत्मा से दूर हैं तो समझो अपने को ही ठगा है।

अपने को कैसे ठगेंगे समझो - कोई सेठ अपनी फैक्ट्री से पैसा उठाता है तो मैनेजर को बताएगा पर अगर गलत काम के लिए उठाता है तो नहीं बताएगा। तो जैसे अपने को ठगा ऐसे ही मनुष्य भी दुनिया में बहुत चतुराई, चालाकी करता है। दुनिया भले ईनाम देगी कि तू होशियार है

पर तूने अपने को ठगा। तुम्हारी चार युग में भले कीर्ति होगी पर अपने से हारा तो क्या होगा?

देखो राजा बने या जज, वकील बने या डॉक्टर highest degree से सिर्फ माया मिलेगी, पर अपने स्वरूप की जानकारी नहीं मिलेगी। अपना स्वरूप कैसे भुलाएं जभी तुम सत्य की वैल्यू (Value) जानेंगे। झूठ की वैल्यू (Value) जानेंगे कि क्या है। संसार झूठ, मिथ्या, changeable है और कीर्ति से भी दुनिया में होना क्या है? कितनी भी बड़ी degree पास किया, तुम्हारा शरीर छूटेगा तो सब कागज़ बाहर फेंक देंगे, जला देंगे पर सत्य स्वरूप साथ रहेगा तो अमर होंगे पर जो सत्य स्वरूप भुलाकर देह में मरेगा वह दक्षिणायन में मरेगा, जन्म मरण में आएगा और फिर उसकी संसार में रील चलेगी। तुमको संसार में कितनी कीमत मिलती है। दरवाज़े तक कितना भी बड़ा आदमी आएगा, तुम उसको कुर्सी देंगे पर जैसे ही वह गया तो तुम दूसरे में फिर तीसरे में वासना रखेंगे। तुम्हारा खाली किसी से भी मतलब पूरा होवे तुम उसे खट्टा करके छोड़ेंगे। तुम्हारा किसी से भी सच्चा प्यार नहीं है। ना ही उसका सच्चा प्यार तुम्हारे से है क्योंकि तुमने अभी तक सच प्रगट नहीं किया है, तो तुमने अपने को ठगा है। तेरे को भी सभी ठगेंगे, हम अपने को जानेंगे तो माया की हिम्मत नहीं है मेरे को ठगने की। सब अपने को ठग कर बैठे हैं, जानकर नहीं

बैठे हैं पर जानकारी होवे उस सत की। तुम पूछेंगे कैसे मिलेगा, जो तुम अंदर में दूसरे में मन रखते हैं, बात करते हैं ऐसा करो ऐसा ना करो उससे तुम्हें क्या फल मिलेगा। जो सच्चा जिज्ञासु है वह पूरी शक्ति अपने ऊपर लगाता है। जो समय है, शक्ति है दम घुट के भी अपने में सारी शक्ति लगाता है। बस इस सत को जानना है और झूठ में time waste नहीं करना है। तुम्हारे को कोई हिलाता है तुम हिलते हैं, हमारे को कई लोग हिलाने आए पर तुमको विश्वास है कि भगवान को कोई नहीं हिला सकेगा। कोई योगी, महा योगी, महाईश्वर भी नहीं हिला सकेगा। हम उस गद्दी पर बैठे हैं जहां कोई उतार नहीं सकता है। दुनिया की कुर्सी में दीमक लगी पड़ी है। पैसे से यह पद नहीं मिलता है। जो खोज में रहेगा वो पाएगा। जो ओम से भी ऊपर है। शिवोहम से भी ऊपर है। अतिसूक्ष्म में ओम भी नहीं बोलना पड़ता है। ओम भी वाणी का एक रस है, शब्द भी उसको सुनाई नहीं देगा, जहां बिल्कुल शांति है, जिसको ब्रह्म का आनंद है, वहां ना भजन, ना कीर्तन, ना ओम, ना शिवोहम उधर खाली सत्य है। वहां देहाध्यास खत्म है। अतिसूक्ष्म के लिए हमको अतिसूक्ष्म होना पड़ेगा। हीरा परखने के लिए सब जौहरी नहीं होते हैं। हीरा सत्य का परखना है, हीरे की जानकारी रखनी है, तो जहां बिल्कुल इच्छा कोई नहीं रहती है। दुनिया बोलती है तो जहां तक शरीर है तो विकार टच

(Touch) होगा, इसका खाना है विकार। अति सूक्ष्म में पहुंचने के लिए अपने को पूरा dissolve करना, बीज ही ना रहे। वह सच्चा योगी है जो मेरे से योग लगाता है। भगवान बोलते हैं "तू कहां भी है, मैं तेरे में हूं", "मैं कहां भी हूं, तू मेरे में है"। हमको एक दूसरे का संकल्प पहुंचे, ये है सच्चा ज्ञान। मैं एक हूं। चतुराई, चालाकी, दंभ, पाखंड सब चला जाएगा। भगवान अंदर की बात जानते हैं। तुम दिल से दिल की बात करो। बाहर से अर्चना वंदना बंद करो। भगवान दिल देखेगा। दाता देखेगा दिल तुम्हारी।

गीता भगवान पत्र संख्या - 11

वेदांत का सार

1. दीया सलाई में आग होते हुए भी आग प्रकट नहीं होती (बिना रगड़े)। परमात्मा सब जगह है, बिना गुरु के नहीं दिखता। बिना गुरु के प्रगट नहीं होता। बिना गुरु के लक्ष्य सम्भव नहीं, गुरु जिज्ञासु को लक्ष्य तक पहुंचाता है।

2. गाड़ी का इंजन गाड़ी को खींचकर मंज़िल तक पहुंचाता है, उसी प्रकार गुरु भी मंज़िल तक पहुंचाता है।

3. जिस प्रकार फोन सबके दुख - सुख की खबर सबको पहुंचाता है, खुद विचलित नहीं होता, ऐसे ही गुरु हमको सत में टिकाने के लिए खुद संसार के दुख सुख से विचलित नहीं होता।

4. जैसे धूप में बैठने से सर्दी नहीं लगती, सत्गुरु के संग बैठने से शोक मोह नहीं सताता।

5. मनुष्य शरीर एक मंदिर है जिसके हृदय कमल में भगवान विराजमान है, जो समस्त शरीर को प्रकाशित और प्रेरित करता है।

6. चश्मा देखता नहीं, आंखें चश्मे में से देखती हैं। इसी प्रकार आंख के भीतर भी देखने वाला कोई और द्दष्टा बैठा है।

7. आत्मा का जहां गीत है वहीं गीता है। जो रहम करे वह रहीम, जो कर्म करे सो करीम। जो दुख हरे सो हरि। जो रक्षा करे वो प्रभु। जो भाग्यवान करे वो भगवान। जो खुद आए वो ख़ुदा है, जो रमा हुआ है सो रमईया। जो आकर्षित करे वो कृष्ण है। जो साकार रूप में आता है वो ईश्वर है। वो सब है, उसके सिवाय कुछ नहीं है।

8. गेहूं का दाना एक है, उपज के अनेक होता है। अनेक में भी एक है।

9. पिंड ब्रह्माण्ड से जुदा नहीं है। जो पिंडे सो ब्रह्मण्डे। पिंड में पांच तत्व होते हैं, ब्रह्माण्ड में भी पांच तत्व हैं।

10. 'जब', 'तब', 'कब' नहीं, पर 'अब' करने से काम चलता है। आज और अभी करने से लक्ष्य की प्राप्ति होगी।

11. यात्रा में हमें किसी प्रकार की चिंता ना हो तो यात्रा तभी सुखदाई होती है। जब कर्म में कर्मफल की आकांक्षा ना हो तो कर्म सुखदाई होता है।

12. आत्म उन्नति में संतोष मान लेना एक बहुत बड़ा विघ्न है। संसार के पदार्थों में संतोष मानना है।

13. उन्नति में देर लगती है, अवन्नती में देर नहीं। आत्म उन्नति में पुरुषार्थ करना पड़ता है परन्तु पतन में कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता।

14. जैसे घास काटने से खेती अधिक होती है ऐसे ही सभी इच्छाओं को काटने से आत्म उन्नति तीव्र होती है।

15. महापुरुषों की छाया में रहने वालों के पास दुख नहीं फटक सकता।

16. चिता मौत से मिलती है फिर भी चिंता समाप्त नहीं होती, बल्कि पीछा करती रहती है। जिसका चिंता करने का स्वभाव होगा अपनी करेगा, पड़ोसी की करेगा, देश की करेगा वह चिंता करता ही रहेगा।

17. यदि हम लगातार चलते रहेंगे तो चींटी की चाल से भी चोटी तक पहुंच जाएंगे। लगातार चलते-चलते मंज़िल मिल जाएगी।

18. मन को मन से ही साधा जा सकता है। यही मन, मुक्ति व बंधन का कारण है। हमें तो समर्थ गुरु मिला है, चलना हमें है।

19. पाप का चिंतन करने वाला कभी भगवान का चिंतन नहीं कर सकता। भगवान का चिंतन करने वालों को किसी का चिंतन नहीं भाता। जगत के चिंतन में उसी का रूप हो जाते हैं, भगवान का चिंतन करने से भगवान का ही रूप हो जाएंगे।

20. धनवान तो बहुत हैं किन्तु भाग्यवान बहुत कम है। जो धन के होते हुए भी दुखी होते हैं, उनके लिए धन भी अभिशाप है। सुख अंदर है, सुखी वहीं है जो विचार में है।

21. मन और प्राण दोनों बैल की तरह जीवन गाड़ी को खींचने के लिए महान शक्तियां हैं जो हमें अध्यात्म मार्ग की तरफ़ भी चला सकती हैं। मन को जो नियंत्रण की शक्ति है वो गुरु देता है।

22. जैसे प्रयत्न से पर्वत पर चढ़ा जा सकता है, चांद पर भी पहुंचा जा सकता है ऐसे ही अध्यात्म उन्नति करने से भगवान तक पहुंच सकते हैं।

23. त्याग, वैराग्य से ज्ञान में चमक आती है, यही ज्ञान हमें लक्ष्य तक पहुंचाएगा।

24. मनुष्य को जहां जाना होता है, वहां की तैयारी की जाती है, तो स्वर्ग नर्क में जाने की तैयारी भी हम करते हैं।

दृष्टांत :- दो सत्संगी थे, वो दोनों एक ही गुरु के शिष्य थे। दोनों एक सी शिक्षा गुरु से लेते थे। दोनों ही स्वर्ग में गए, एक की थाली में छप्पन भोग आते थे और एक को रूखा सूखा खाना मिलता था। उसका मन बड़ा चलता था, उसने पूछा ऐसा क्यों? हम दोनों एक ही जगह से आए हैं। तुमने जो कमाया अपने घर वालों के लेखे करके आया। दूसरे ने जो

कमाया वो गुरु के लेखे करके आया। हम गुरु के घर के हैं, गुरु के नहीं। गुरु स्वर्ग में भी हमारा हिसाब करता है।

25. जो मार्ग अनेकता से हटाकर एकता की ओर ले जाए, वही मेरा परमपद है।

26. जैसे लिफ्ट से ऊपर जाते हैं, यदि वह ठीक से बंद नहीं होगी तो ऊपर जाएगी ही नहीं, ऐसे ही हमारी इन्द्रियों का कोई भी द्वार खुला रहेगा तो आत्मा में नहीं टिकेगा।

27. जैसे मीठा फल खाने के बाद कोई भी फल फीका लगेगा, ऐसे ही आत्म आनंद मिलने के बाद सब विषय विकार छूट जाएंगे।

दृष्टांत :- सूर्य पुत्र मनु वेद लेकर नाव में जा रहे थे। बहुत तेज़ तूफ़ान आ गया, उन्होंने वेदों को संभाल कर छाती से लगा लिया। अचानक नाव तूफ़ान में थम गई तभी नाव के नीचे बहुत बड़ी वेल मछली थी, उसका नाम मस्तस्य था। मछली ने कहा तूने वेद की रक्षा की है, मैंने तेरी रक्षा की। किसी ना किसी रूप में भगवान आता है। वह हमारी हर तूफान में रक्षा करते हैं।

28. प्रारब्ध भी होटल की तरह है, जितने पैसे आपके पास होंगे उतना ही मज़ा ले सकेंगे। इसी तरह प्रारब्ध कर्म का मज़ा ले सकेंगे। पुण्य कर्म जब पूरे हो जाते हैं तो कोई शिकायत नहीं करता।

29. ब्रह्मचर्य को पाने के लिए ब्रह्मचर्य पर चलना ज़रूरी है।

30. संपत्ति ही विपत्ति बनकर मनुष्य को अज्ञान में ले जाने का कारण है। अगर ज्ञान ना हो, दिल है दिमाग नहीं, दौलत है दिल नहीं।

31. भक्त को जैसे पत्थर में भगवान दिखता है, नास्तिक को साक्षात भगवान भी नहीं दिखता, उसके लिए भगवान भी पत्थर तुल्य है।

32. जैसे धरती के अंदर श्रोत बह रहा है, ऐसे ही मनुष्य के अन्दर ज्ञान श्रोत बह रहा है। ज्ञान तो अंदर है ही है, जो अंदर नित्य निरंतर बह रहा है।

गीता भगवान पत्र संख्या - 12

हो सकता है कि आपने गुनाह देखने में गलती की हो या किसी हालत में आकर मन के किसी मुराद के सिवाय वो गुनाह हो गया हो। ऐसे भी जानों कि अच्छे बुरे गुण हरेक में होते है, इसलिए आप उनके अच्छे गुण देखके उनसे प्रेम करो । सच्चा गुनाह देखकर भी किसी की बेइज्जती नहीं करो, नहीं उन पर क्रोध करो। उनके गुनाह निकालने की कोशिश करो। किसी वक्त शायद तुम्हारे निरादर (बेइज्जती) या क्रोध करने पे गुनाहगार की गुनाह की वृत्ति दब भी जायेगी पर इस तरीके से गुनाहगार की वृत्ति बिल्कुल नाश नहीं होगी पर हो सकता है कि तुम्हारे द्वारा की हुई बेइज्जती या क्रोध उसके मन मे चुभता रहे। इसलिए उसका मन गुनाह के पश्चाताप करने के बदले तुम्हारे किये निरादर व क्रोध का बदला लेने की सोच में लगा रहे और इसलिए उसमें दूसरे नये खराब ख्याल पैदा होते रहें। फिर तुम भी उसका ऐसा खराब व्यवहार देखकर ज्यादा क्रोधी और गुनाहगार बन जाओगे। अगर किसी के अवगुण बिल्कुल निकालने हैं तो पहले उस इंसान के दोस्त बनें और उसके मन में अपने लिये प्यार और श्रध्दा पैदा करें। फिर उसको समझना चाहिये । एक बात याद रखो कोई भी दूसरे के सामने अपनी बेइज्जती सहन नहीं कर सकेगा । वह व्यक्ति चाहें कुछ कह नही भी सके तो भी उसे बहुत दुःख होगा और मन में बेइज्जती करने

वाले के लिये बुरी भावना पैदा होगी, इसलिए अगर किसी को कुछ कहना है तो अकेले में कहो । वो भी जितना हो सके उतना प्यार से, मीठी जुबान से, जैसे अपने फ़ायदे नुकसान का ख्याल रखते हैं वैसे दूसरे का भी रखें।

दो मनुष्य आपस में बात करते हों तो उनकी बात सुनने की कोशिश नही करें और अगर तुम्हारे वहाँ मौजूद रहने से उनको संकोच होता हो तो आप वहाँ से हट जाओ। इसके सिवाय उनसे कोई बात खोद खोद के नहीं पूछो क्योंकि वो बात अगर बताने योग्य नहीं होगी तो तुम्हारे बार बार पूछने पर उनको या तो झुठ बोलना पड़ेगा या धर्म संकट में पड़ जायेंगे कि क्या करें जिससे आगे चलकर उनमें दूसरे अवगुण भी आ जायेंगे - जिसका कारण आप बनोगे। किसी से भी खराब व्यवहार नहीं करो। जब भी कोई अपनी बात आप से करे तो अपनी बात बीच में मत लाओ क्योंकि तुम्हारी बातें सुनने में उसको उतना अच्छा नहीं लगेगा जितना अपनी बात बताने में। इसलिए आप उसकी बात सुनो और उसको ऐसी अच्छी पसंद आने वाली बात बताओ कि उसके हृदय में तुम्हारे लिये प्रेम पैदा हो । कोई आपस में बात करता हो, तो आप बीच में बात करके बात को नहीं काटो। तुम्हारे बात किये बगैर ही काम चल जाये तो बहुत अच्छा पर अगर उसके बात को खंडन करना बहुत ज़रूरी है तो उसकी बात हो जाने के बाद शान्ति,

इज्जत, नम्रता से अपनी बात कहो। बेकार नहीं बनो, गुस्सा मत करो कि वो तुम्हारी निंदा क्यूँ कर रहे हैं? जरूर कोई कारण होगा। अधिकांशतः : तो अपनी भूल अवश्य मिलेगी, उसको दूर करो और निंदा करने वाले की भलाई समझो । प्रशंसा सुनके खुशी से घमंड में नहीं आ जाओ। अपनी कमजोरियों को भुलाओं नहीं, उनसे बेपरवाह नहीं हो जाओ। प्रशंसा का कारण अपने को समझ के अभिमान नहीं करो। परमात्मा की कृपा समझो जिसने तुम्हारे से प्रशंसा का काम कराया। बड़ाई को कभी भी मन में मत आने दो क्योंकि, वो मीठी छुरी है, अजीब ज़हर है, बड़ाई से हमेशा दूर रहो।

गीता भगवान पत्र संख्या - 13

सतचित आनंद स्वरूप प्रिय ममरूप बेगमपुरवासी हमेशा आंनद में रहना। प्रिय पत्र तो तुम्हारा बहुत दिन पहले मिला है, पर जवाब बहुत देर से दिया है । दूसरे सभी का भी मिला है, सबके नाम तो याद नहीं हैं, उनको अपने नाम ज़रूर याद होंगे जिन्होंने पत्र लिखें है। आज दिन को सोये पड़े थे तो नींद नही आई, समझा कि आप सब बहुत याद कर रहे हैं और कह रहे हैं कि ये कैसा भगवान है जिसको हमारी याद नही पहुंच रही है, आखिर आपकी याद ने नींद से उठाके बैठा दिया कि, नहीं जीना है अच्छा उसी का, जो रोते हुए को हसांना न आये। ऐसा जीना भी किस काम का हमारा जिसमें सिर्फ आराम करें। पर देखा तो, आराम तो सिर्फ एक आध घंटा होता है बाकी तो उठके कहीं न कहीं पत्र लिखते है या तो सतसंग मे टाईम जाता है या घर में है तो कोई न कोई आ जाता है, मतलब तो प्रिय का ध्यान या प्रिय की बातें । बाकी तो सब कामों से गुरू ने छुड़ा दिया है, ये गुरु की और तुम्हारी महिमा है जो अपने प्रेम रूपी कैद में रखा है तो सब फर्ज धर्म से आज़ाद कर दिया। हमने जो खुशी से गुरू को कहा कि मैं कभी भी आज़ाद न होउँ, कैद करो तो कबूल हो जाउँ, गुरू के प्रेम रूपी कैद में रहने से दुनिया के कैदी होने से छूट गये, नहीं तो अंदर ही अंदर में मेढ़क के जैसे सीज के पूरे हो जाते थे, हड्डी भी नहीं बचती थी।

फिर तुम्हारे जैसे प्रेमी मिले जिन्होंने बाकी भी बंधन काट के निर्बंधन कर दिया। जिसपे गुरू हाथ रखेगा उसपे दुनिया में कोई भी हक नहीं रख सकेगा, इसीलिये पहले गुरू के पास आते हैं कि दुनिया के तापों से बच जायें। यहाँ हमने सभी से पूछना शुरू किया है कि माया में आप कितना सुख समझते हो, हरेक के अंदर जितना ज्ञान है, समझ है, माया मिथ्या समझी है, ब्रह्माकार वृत्ति है, उतना जवाब हरेक देता है। आप भी सतसंग में ये सवाल पूछना सबसे तो उनके बात करने से तुमको पता चलेगा, तो फिर ज्यादा उसपे बात होगी। हमको पत्र में सिर्फ अपनी तारीफ़ नहीं चाहिये, लिखके भेजो कि तुम क्या नहीं हो, ज्ञान को समझने की कोशिश करो। भट्ट और चारण नहीं बनो। ज्ञान अति सूक्ष्म है, सूक्ष्म वृत्ति से कैच (Catch) करेगें, सुनेंगे मन मनाभव होके तो तुम्हारा उद्धार होगा। हरेक को ये ज्ञान समझके मास्टर बनना है। अपने को जिज्ञासु कह के मांगने की खिड़की ढूंढ रहे हो सो अभी तुम जिज्ञासु नहीं हो। जिज्ञासु मतलब ज्ञान की जिज्ञासा रखनेवाला, सो आप सब पहले दिन आये तब ऐसी जिज्ञासा उत्कंठा लेके आये, तभी जितना पवित्र ज्ञान तुम सुनके ग्रहण कर सके, बस इतने तक जिज्ञासु अक्षर लाना ठीक है पर अगर तुमसे कोई सवाल पूछता है तो तुम कभी नहीं कह सकते कि इस सवाल का जवाब मैं नहीं दे सकता क्योकि मैं जिज्ञासु हूं। गुरू से पूछेंगे तब तक उसका

शरीर शान्त हो जाये तो उसके भ्रम और संशय अंदर में ही रह जायेगें। ऐसे ही कलकत्ते में थे तो श्याम से किसी ने पूछा कि आप जैसा आप समान कोई इस ज्ञान में इस वक्त है? श्याम ने कहा पहले तो माता मेरे आगे बैठी हैं और दूसरी ये हमारी लड़कियां सब बैठी हैं, आप किसी से भी बात करो, उसके अन्दर में पता चल गया कि यहां सिर्फ बातें नही हैं पर हरेक अपने निश्चय में है। वैसे ही आपमें से हरेक को प्रोफेसर बनाना चाहते है जिसे हरेक बात का अनुभव होगा तो किसी को भी पक्का बता सकेंगे। आपमें से किसने और कितना माया को मिथ्या समझा है ये सच पत्र हमको लिखके भेजो तो हमको पता चलेगा कि आपने कितना ज्ञान उठाया है। ब्रह्माकार वृति है या मायाकार वृति है। अमूल्य माणिक अन्दर में है तो मुँह से दिखायी देता है। जैसे किसी अमीर का बेटा या बीबी या बहू को किसी से बात करते देखते हैं तो कहते हैं कि ये तो किसी खानदानी घर के लग रहे है, उसकी रहणी कहणी से महसूस करते हैं कि ये ऐसा वैसा नहीं हैं, वैसे ही आत्मनिश्चय वाले का भी पता चल जाता है, वो भी प्रगट हो जाता है, उसकी रहणी से पता चल जाता है। आज सतसंग में कहा कि आपसे जब पूछते हैं कि कौन सी मौज में है तो हमारी पहेली नही समझते है और कहते हैं कि हम बहुत आनंद में हैं पर ये भूल कभी नहीं करना कि दुनिया के सुखों को ही समझो कि मैं बहुत मजे में हूँ,

आनंद में हूँ। आनंद का मतलब हमेशा एक जैसा, कभी भी कम ज्यादा नहीं होगा, पर जो माया के सुख को आनन्द समझता है वो अपने से धोखा करता है। "जो चढ़ती उतरती है मस्ती वो हकीकत में मस्ती नहीं है"। वो माया का झूठा नशा है जो आज है कल नशा ही गुम हो जायेगा। तो असल में वो आनंद नहीं है, सुख और आनंद में बड़ा फर्क है, अंदर में खोजना करो कि तुम कहां और किस के आधार पर खड़े हो। ज्ञानी अपने नित्य सुख में रहता है, जिसका दुनियावी सुख पे आधार नहीं है। आप भी खुद को जाँचो और एक एक जन अपने अनुभव से पत्र लिखो कि दुनिया में महापुरूष गुरू या पैगम्बर की इज्जत है या साहूकार की इज्जत है? साहूकार राजा भी अपना छत्र उतार के आके गुरू के कदमों में बैठता है कि जगजीत तो हूं पर मन जीत नही हूं। मन मारण की औषधि सतगुरू के पास है ना कि साहूकार के पास। साहूकार का धन सब खारे पानी की तरह है जो किसी के पीने के काम नही आता। पाप की माया पिराछत छाया इसलिए गुरु नानक ने लालू सुतार (बढ़ई) के घर जाके ढोढा (रोटी) छाछ खाया पर साहूकार के हलवे पूड़ी नहीं खाये, साहूकार को शक हुआ कि क्यों नहीं खा रहा है और उसकी पूड़ी से खून निकला। तभी गुरु नानक ने ये पंक्ति कहीं कि "जो रत लागे कपड़ा तो जामा होये पलीत, सो रत पीवे मानसा तो कैसे हो निर्मलचित" कहा अगर कोई कपड़े को

खून लगता है तो कपड़ा खराब हो जाता है। वो रत (खून) लोगों का तुम पीता है (लोगों से दोहरा ब्याज लेके), जुल्म कर रहा है तो तुम्हारा चित निर्मल कैसे होगा ? साहूकार के कपाट खुल गये अंदर की आंखे खुल गई। ऐसे ही गुरू आकर अन्दर की आँखे खोलता है। आज साहूकार की इज्जत है तो कल बेइज्जती भी उसी की होगी। नफरत भरी लोगों की खुशी पल पल में रंग बदलती है। और सब सुख आनंद। आप सबके लिए प्यार आपसे हरदम मिले हुए.....।

गीता भगवान पत्र संख्या - 14

जिसने सजातीय और विजातीय स्वगत भेद से शून्य अद्वैत आत्मा का साक्षात्कार कर लिया है और सच्चिदानंद आत्मा में जिस की निष्ठा हो चुकी है, यदि फिर वह पुरुष काम के वश होकर नाना प्रकार की क्रीड़ा करता हुआ दिखाई पड़े तो महान आश्चर्य है।

अर्थ:-

सजातीय - औरत और औरत के बीच चाहे कितनी भी अट्रैक्शन हो जाए वह वासना वाली अट्रैक्शन (Attraction) नहीं होती। सब मर्द बैठे हैं आपस में, बे खबरी में, बेख्याली में, एक औरत वहां जाकर बैठे या यहां औरतों के बीच कोई मर्द आकर बैठे, होना नहीं चाहिए कुछ पर होगा, क्योंकि मन को पता है विजातीय। साइंस कुछ और कहती है, प्लस माइनस का झगड़ा है या कुछ भी है। सजातीय शरीरों में सजातीय भेद होते हैं। एक औरत दूसरी औरत से अलग है। एक पेड़ दूसरे पेड़ से अलग है। एक ही जात पेड़ों की, फिर भी आम का पेड़ उसका पेड़, इस का पेड़, सब पेड़ अलग। एक पेड़ों की जात होकर भी उनमें भी भेद। है एक क्वालिटी (Quality) फिर भी अलग-अलग। शरीरों में भेद आते हैं। आत्मा में सजातीय भेद नहीं, क्योंकि जात ही नहीं तो भेद कहां से

आएगा। विजातीय भेद मनुष्य से जानवर अलग है। जानवरों से पेड़ अलग है। मनुष्यों से पेड़ अलग है। हर चीज अलग। अंडज, जेरज, श्वेतज, उदभुज। चारों ही अलग-अलग है। जब जात ही नहीं तो विजात कहां से आएगी? आत्मा में विजाति नहीं है, जाती भी नहीं है। स्वगत भेद - स्वगत क्या होता है? एक ही तुम्हारे शरीर में, तुम जो हो, सिर से पांव अलग है। सिर में सिर अलग, बाल अलग। खोपड़ी अलग, कपाल अलग। गला अलग। नाना अलग-अलग नाम। वहीं से आ जाओ, आत्मा में जात ही नहीं तो स्वगत कहां से? एक पोलार में कहां से निशानी आई? जैसे आकाश का ओर छोर नहीं। आकाश में, यह अमेरिका है, यह इंडिया है ऐसा नहीं कहा जा सकता। आकाश का है कोई नाम? पूरा आसमान कहते हो। उसमें टुकड़े टुकड़े हुए नहीं। धरती के टुकड़े हैं तो नाम भी अलग अलग हो गए। पांच खंड। तो पांचो खंडों के अलग-अलग नाम। फिर उसके भी अलग-अलग टुकड़े। एशिया के खंड में कितने मुल्क आ जाते हैं। फिर उन मुल्कों में शहर अलग-अलग। उनकी एड्रेस अलग-अलग। धरती पर यह सब है। आसमान की कौन सी एड्रेस दोगे? उसमें मुल्क, शहर, खंड है? यह तो दिख रहा है। तेरा आत्मा जो उससे भी बहुत भीतर, सूक्ष्म, यह आंखें भी नहीं पकड़ पाती। जुबान भी नहीं। तो उसका कौन सा भेद गिनोगे तुम? बोला इन शरीरों में यह सब भेद है बाहर।

थोड़ा अंदर जाओ, थोड़ा इस शरीर की खाल को चीरकर अंदर जाओ, शरीर भी खाली बाहर की खाल। ना किडनी में फ़र्क है, कभी-कभी किडनी किसी की फेल होती है तो उसके औरत की लगा देते हैं। लगाते हैं मैच होनी चाहिए खाली। ब्लड का ग्रुप वही है तो एक दूसरे का लगा देते हैं। औरत का ब्लड है इसलिए नहीं लगेगा ऐसा नहीं। ब्लड में कोई जात नहीं। किडनी की लीवर की कोई जात ही नहीं। ब्लड में ग्रुपिंग है पर जात नहीं। नसें नाड़ियां छोटे बच्चे को heart लगाना होता है तो किसी और का भी लगाकर ट्रांसप्लांटेशन कर देते हैं। पता नहीं क्या-क्या हो रहा है। तो यह नहीं देखा जाता की लड़की का Heart तो लड़के को कैसे लगाया? Heart में लड़का लड़की नहीं है। माना खाली एक बार का 0.1% भेद आ गया है, ये औरत है, ये मर्द है। इसमें ये ये ऐसे ऐसे होते रहते हैं। जितना ख्याल का प्रॉब्लम (Problem) है उतना शरीरों का नहीं। यह Mischievous minister जो अंदर बैठा हुआ है, वह ही गड़बड़ करता है। पक्की बात है। जब इस देह अध्यास को लांघ कर भी तर जाते हो और मगन रहते हो अपने में, उस समय औरत, मर्द का ख्याल भी नहीं आता है। अपने ज्ञान में गुम होते हो, अपने प्रेम में परमात्मा के, तो औरत कहां से आई, मर्द कहां से आया? डॉक्टर की दवाई 1% फर्क करती है बीमारी में बाकी 99% होता है तुम्हारे ख्याल

का। 0.1% शरीर, 99% तुम्हारा मन है। तुम बोलोगे ऐसे कैसे नहीं होगा? होगा ना जरूर? क्योंकि प्रैक्टिस ही वह की है, सुना भी वही है बचपन से। लड़की को लड़के के साथ बात नहीं करनी चाहिए। अंदर में बैठ गया ख्याल। अभी बाहर से तो मान लिया बात नहीं करनी चाहिए। पर मन को कौन समझाए? मन बात कर लेता है। मन को अट्रैक्शन (Attraction) पैदा हो गया। जैसे ही No कहा, अट्रैक्शन (Attraction) चालू हो गया। यह जो आजकल का हो रहा है, वह अच्छा नहीं है माना क्योंकि ज्ञान नहीं है। टू मच वह था, टू मच अभी यह हो रहा है। बिना ज्ञान के छुटकारा नहीं है। क्योंकि मन मधुसूदन में आने के सिवाय मन अमन, शांत, प्योर हो ही नहीं सकता। ज्ञान के सिवाय मन कभी भी निर्विकारी भाव में नहीं पहुंचेगा।

जब सजातीय विजातीय जान गए फिर भी काम और मोह में बिल्कुल जानबूझकर ऐसे ऐसे अक्षर कहे गए हैं, यदि वह पुरुष काम के वश होकर नाना प्रकार की क्रीडा करता हुआ दिखाई पड़े, तो महान आश्चर्य है। क्योंकि एक सत्पुरुष भी वह बातें नहीं करेगा। वह ब्रह्म ज्ञानी पर तो एक बड़ा भार है। बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। पर थोड़ा आगे बढ़ोगे, योग वशिष्ठ पढ़ोगे तो दंग रह जाओगे। क्योंकि वह स्थिति है। परम ज्ञानियों की स्थिति का बखान ऐसा ऐसा किया तुम हैरान हो जाओगे। इसलिए इस समय

योग वशिष्ठ नहीं पड़ना। ज्ञानियों को हर हदों से छुड़ाया गया। हर हद से। पर क्योंकि वह पढ़कर जिज्ञासु बिछड़ जाएगा इसलिए हाल-फिलहाल मना होती है। ब्रह्मज्ञानी की स्थिति ब्रह्म ज्ञानी ही जान सकता है। वह लेवल चाहिए। जहां उसको सातों भूमिकाओं को पार करके बिल्कुल तुर्यातीत हो जाता है। वह बच्चे सदृश्य हो जाता है। वह अलग बात है अभी दिमाग से तुम सोचोगे, सोच भी नहीं पाओगे। क्योंकि वह स्थिति नहीं है। इसलिए बैटर यह ही रहता है कि अष्टावक्र पढ़कर यह जबरदस्त प्रैक्टिस होनी चाहिए कि मेरा मन, ख्याल, संकल्प, विकल्प और ऐसा भी नहीं है वह सुन सुन के संसार अंदर डाला था यह सुन सुन के संसार निकल भी जाता है। तो निर्विकारी भाव परमात्मा का भाव भी प्रवेश कर जाता है, यह पक्की बात है। क्योंकि पूरा संसार सुन सुनकर, देख देख कर आया। अब जब हम कोई आदर्श को देखते हैं, उनसे जब हम यह वार्ताएं सुनते हैं, किसी आदर्श की ही वार्ताएं है ये। कही हुई। नहीं तो राजा जनक कभी स्वीकार नहीं कर सकता था, दादा भगवान स्वीकार नहीं कर सकते थे। महान आदर्शों की वाणियां पढ़ रहे हैं, सुन रहे हैं तब जाकर अंदर सहन होती है। वह पक्के रह सकते हैं तो मैं क्यों नहीं? वह निर्विकारी हो सकते हैं मैं क्यों नहीं? आर्य समाज का बड़ा स्वामी दयानंद सरस्वती उनसे पूछा गया कि आप कार्य में तो लगे आपके पास अनेक तरह के

लोग आए होंगे स्त्रियां मर्द। उन्होंने कहा आज तक मेरे अंदर कोई भी कामना का ख्याल नहीं आया है यह मैं गारंटी से कह सकता हूं। उसके शब्द की जो ताकत थी सामने वालों ने स्वीकारा। पॉसिबल (Possible) है। ज्ञान के बाद की अपनी स्थिति को तुम देखोगे अपने ज्ञान को देखो। जहां तक पहुंचे हो पहले सुन सुन के, कुछ और थे। देख देख कर, कुछ और थे। अब सुन सुन के, देख देख कर कुछ और हो जाते हो। माना मन गंदा नहीं है। मन खराब नहीं है। जो रंग डालो उसका रंग ले लेता है पानी। अब मन को राइट रंग मिला है तो राइट रंग ले रहा है। पहले wrong रंग मिले थे, wrong कंपनी, wrong शब्द। ऐसे ऐसे कंपनी में लोग बैठते थे जहां पर कामनाओं को उभारा जाता था। भड़काया जाता था चिढ़ाके, छेड़के। ऐसे ऐसे शब्द बोल कर। तुम ना चाह कर भी क्रोधित हो जाते थे। कामनाओं में और लोगों को देखा तो हमारे अंदर भी कामनाएं उठी। Tensions पैदा किए जाते थे। ऐसे ऐसे कंपनी में लोग बैठते थे। Tell me your company and I will tell you what you are! यह तो सच्चाई है अब तुमको वो कंपनी वो संग पसंद है? नहीं। खीचेंगे लोग। Be good and all will leave you. वो कहेंगे ये हमारे काम के नहीं हैं। गलत लोग लड़ाई नहीं करेंगे, तुमको छोड़कर जाएंगे। पहले थोड़ी लड़ाई भी करेंगे। जितना गहरा संग उतना झगड़ा।

अब जब तुमने संग ही करना बंद किया उनको अवॉइड (Avoid) करना शुरू किया तो वो भी छोड़ देंगे। ऐसे कंपनी छूट जाती है।

ये कोई शब्द नहीं है सजातीय, विजातीय, की याद कर लेना है cram नहीं करना है अंडरस्टैंडिंग (Understanding) होवे। खुद पर लाकर तुम कर सकते हो। सजातीय, विजातीय और स्वगत खुद पर लाकर देखोगे, निर्विकारी भाव आ जाएगा। छोड़ो बुक को, छोड़ो दुनिया को खुद में ही तुमको पता पड़ जाएगा। यह एक ग्रामर की तरह ही टुकड़ा है, लेकिन काम का है। इसलिए याद रखने जैसा है।

जो ज्ञानी पुरुष काम को ज्ञान का अत्यंत वैरी जानता हुआ फिर भी काम की इच्छा करे, तो इससे बढ़कर क्या आश्चर्य है। जैसे मृत्यु से ग्रस्त हुए पुरुष को समीपवर्ती विषय भोग की इच्छा नहीं होती है, वैसे ही विवेकी पुरुष को भी विषय भोग की इच्छा ना होनी चाहिए।

अर्थः-

जिस समय तुम बहुत बीमार हो, मरने के नजदीक हो। दूसरी बात कभी कोर्ट के केस सिर पर हैं, उस समय कामनाओं को लाकर दिखाओ। आज सुनवाई है, अभी तुम वासना में आना? दिमाग में वही एक ख्याल। तो दूसरे ख्याल आएंगे नहीं। क्योंकि एक समय पर मन एक ही ख्याल कर

सकता है। अब जब मृत्यु के नजदीक पहुंचा हुआ व्यक्ति अगर कामना करता है माना उसको मृत्यु के बारे में इतनी गहराई से पता नहीं। पर जिस समय यह पता पड़ जाए कि मौत नजदीक है।

यादगिरी मौत जी थी बनाए तोखे मेहमान हिन दुनिया में।

मौत की यादगिरी तुम्हें दुनिया में मेहमान बनती है।

शुरू में हम जब सत्संग में आते थे तो बोला जाता था कि दिन में बीस पच्चीस बार मौत को याद करना। इतनी उदासी छाई रहती थी कि चाय कप की भी इच्छा नहीं हो पाती थी। मौत मौत मौत जैसे हवा में गूंजती रहती थी। ऐसे लगता था की मौत पीछा कर रही है। इतनी गहराई से बोला जाता था कि मौत जैसे पीछा करे। अब यह जो ज्ञान सहित था तो वैराग्य आता था। बिना ज्ञान के मौत का खाली भय होता है। नए-नए ज्ञान में है तो थोड़ा भय भी रहता है और मन दूसरी बातें कर ही नहीं पाएगा। यादगिरी मौत की या मौत के बिस्तर पर व्यक्ति को बोलो चलो उठो लोभ करो, काम करो, वासना करो कुछ नहीं कर पाएगा। जैसे वह मौत के बिस्तर पर पड़ा हुआ व्यक्ति कुछ नहीं कर पाता है, बोला जिज्ञासु भी मौत को नजदीक से देख लेता है। ज्ञान को समझ गया माना मौत को नजदीक से देख लिया। अब ज्ञान सुनने के बाद सुनता व्यक्ति टनों ज्ञान है टन के टन ज्ञान सुना है। छटाक भर ज्ञान भी अंदर आ जाए रत्ती भर

भी ज्ञान अंदर चला जाए तो सक्सेस (Success) हो जाते हैं। जबसे दादा भगवान का यह कार्य शुरू हुआ है कितने मण, कितने टन ज्ञान अंदर चला गया है? इतनी कैसेट्स है जो सुनना चाहो, प्ले करो, वाणी निकल आएगी। वाणी सुनी अच्छा किया। पर सुनने के बाद यदि अंदर जाकर हिलाया और उसमें डूब गए फर्क है कि नहीं? इसलिए कहा जाता है कि बहुत सुनो कुछ ना कुछ तो अंदर पल्ले पड़ जाएगा। पर जो सियाने हैं समझदार हैं थोड़ा ही सुनकर उसको अमल में लाते हैं। आया एक गुरु के पास, देखा भीड़ लगी पड़ी थी बैठ गया, वह भी सत्संग सुनने। वैराग्य की उसको ऐसी तो लप्पड़ लगी, सब बातों से वह हट गया। सालों के बाद वह लौटा तो वही लोग बैठे थे। उसने पूछा गुरु की लप्पड़ नहीं लगी है अभी तक तुम लोगों को? मैंने जो यहां से सुना, बात ऐसी ज़हन में चली गई कि फिर सुनने की ज़रूरत नहीं पड़ी, गुरु मेरे भीतर आ गया। सब बातों से मेरे को गुम कर दिया। तुम लोगों ने अच्छी तरह से नहीं सुना है तो आ रहे हो। उन्होंने बोला हां सच्ची बात है। फिर क्या बोला जाता है, हां कोई-कोई बहुत ही स्पेशल लोग होते हैं, जैसा एक वाल्मीकि। सब थोड़े ही वाल्मीकि जैसे संत हो सकते हैं, जो एक घड़ी में हो गया अचानक। नहीं होते हैं तो आते आते हो जाते हैं और क्या? सबका मन

ऐसा ही है डाकू जैसा ही। कहीं ना कहीं अंश में, मन डाकू भी है, चोर भी है, खुराफाती भी है, ठग भी है। सत्संग में आकर सीधा होता है।

Transformation ज्ञान से हो सकता है, यह तो सच्चाई है। ऐसा ज्ञान कहीं नहीं है, यह सच्चाई है दावे के साथ कह सकते हैं। सब जगह ज्ञान है पर माया का मारण नहीं है। जो दादा भगवान ने खोजना करके, अंदर से निकाल देवे, माया का पलटा कर देवे। यह तो सच्चाई है कि तुम उस बर्तन में दूध नहीं डाल सकते जिस में थोड़ा भी कचरा हो। दो चार रुपए की चीज ही तुम गंदगी में नहीं डाल सकते तो परमात्मा कैसे समा सकता है जहां कुछ पाप है। जब तक वह cleanliness नहीं आती है परमात्मा बैठने का नाम भी नहीं लेता है। बैठ ही नहीं सकता है परमात्मा। बैठेगा तो भाग जाएगा। जैसे बदबू वाली जगह पर नहीं बैठ सकते हो, बदबू आ रही है, भागो यहां से, सफाई होवे। तो भगवान क्यों हमारे भीतर के बदबू में बैठे। अज्ञान वाली, मैं मेरे की बदबू लगी रहे। समझो कभी पता भी पड़ रहा है कि यह मेरी आदत है, स्वभाव है, वासना है, उसके बाद का पुरुषार्थ, दर्द, गुडाकेश होना। एक होता है दीर्घ सूत्री, आज का काम कल पर डालने वाला। अर्जुन को भगवान कहता है, तुम गुडाकेश। क्यों? लड़ाई के मैदान में ज्ञान निकलवाया उसने यह परम पुरुषार्थी की निशानी है। कृष्ण तो है ही है पुरुषार्थी। अर्जुन की skill देखो। जो दुनिया में

skill लगाते हो, वह ज्ञान में लगा ली। क्योंकि मौत खड़ी है ऊपर। जब मौत की भासना, reality में खाली दिख जाए, उस समय परम ज्ञानी हो जाते हो। एक बार तो पूरा मर कर देखना ही पड़ेगा। जीना है बहुत तो मस्ती है। इसलिए दादा भगवान कभी कभी शमशान में ले चलते थे, शमशान घाट में देखो मुर्दे जल रहे हैं, तुम्हारी वृत्ति सूक्ष्म हो जाती है उस समय। मोटी बुद्धि सूक्ष्म हो जाती है। वहां परम ज्ञानी हो जाते हैं कोई भी। देखते हैं, क्या है? इसके लिए? End तो यही है। ज्ञान से और सच्चे ज्ञानी हो जाते हो। नहीं तो कोई भी शमशानी ज्ञानी भी हो जाते हैं, शमशान का ज्ञान। थोड़ी देर के लिए उसके अंदर भी विचारना जागती है। पाप ठगी किसके लिए कर रहे हैं, इसके लिए? अकेले भोगना पड़ेगा। भोगना अकेले हैं व्यक्ति को। कोई पाप करता है, तो जेल में अकेले जाएगा। परिवार वाले साथ नहीं जाएंगे। खाने के समय सब आकर बैठेंगे। जब काटा जाएगा, मारा जाएगा वही लोग आकर कहेंगे, तुमने ऐसा क्यों किया? किसने कहा था, पाप करो। ठगी करो। जब इतना किसी के अंदर डाला जाता है, रोज-रोज तब मन ready होता है रो रो के कि चलो अच्छा अभी रिश्वत नहीं लेंगे। बहुत समय तक, क्यों? क्योंकि सामने जो दिखती है माया, नजर में आ रही है, वह temptation देती है। मुफ्त की माया है, बिना मेहनत के। कोई भी रिश्वत पकड़ा के जाएगा तो तुम

कहोगे मेरी मेहनत का फल है, यह चालाकी। पर जब विवेक जागृत हो जाता है तो तुम माया से रहित हो जाते हो। बड़े-बड़े भले भले लोगों को हमने देखा है, जो माया को No नहीं कर पाते। He is a brave man who can say No. No करना बहुत ही दम वाला काम है। है सामने माया और No करें। एक ने बोला मेरे को वह जबरदस्ती देकर गया। मैंने उसको लौटा दिया। क्योंकि मार बहुत पड़ी है मेरे को इसलिए। जब भी वह फोन करें पहले उससे पूछते थे क्या तुम रिश्वत लेते हो? सच्चाई उसके औरत की थी, नहीं तो वह नहीं छूट सकता था। यहां कितने भी लेक्चर सुने, नहीं सुधरेगा, जब तक औरत हिलाए नहीं। औरत ने बोला मेरे को नहीं चाहिए इसका एक भी नया पैसा। क्या होगा, क्यों खाए हराम का? मेरे को उसकी रिश्वत की एक भी पाई नहीं चाहिए। नहीं लोगे रिश्वत तो मार बहुत आएगी तुम्हारे ऊपर क्योंकि जो दूसरे लेते हैं, वह चुगली लगाएंगे तुम्हारी। तुमको शायद यहां से भगाया जाए। ऐसी जगह फेंका जाए जहां तुम कुछ कर ना सको। एक आदमी बहुत बड़े ओहदे पर था। उसने रिश्वत लेने से इनकार किया। उसके ऊपर का जो बॉस था उसने देखा कि यह नहीं लेता है तो दूसरे सब मेरे को गंदी नजर से देखते हैं। सब ने मिलकर उसको एक ऐसी उजाड़ जगह पर भेज दिया, जहां उसका एक भी काम नहीं। मच्छर, जंगल, अकेला, बयाबान। ऐसी

मिलीभगत। वह बेचारा डिप्रेशन केस हो गया। शुक्र है उसके बेटों ने कहा कि आपकी दुकान है, आपने ही पैसे डाले हैं, जो हम यहां चलाते हैं, आप यहां लौट जाओ। छोड़ो उस जगह को। उस पद के लोभ को छोड़ो। लौट गया वह। यहां चार चार दुकानें, वो पूरा ही नहीं पड़ता था। भूल गई उसको वह बातें सब। यह भी एक chance रहता है कि तुम No करो तो तुमको कहीं और भेजा जाए। दूसरा अगर तुम्हारे अंदर विल पावर है, तो तुमको कोई भी जबरदस्ती नहीं दे सकता।

आत्मा नित्य है और शरीर अनित्य है। इन दोनों के विवेचन करने वाले का नाम विवेकी है। और आनंद रूप ब्रह्म की प्राप्ति का नाम मोक्ष है। उस मोक्ष की कामना वाले ज्ञानी को ऐसा भय हो कि असत् रूप स्त्री, पुत्र और धनादिकों के साथ मेरा वियोग हो जाएगा, तो महान आश्चर्य है। क्योंकि स्वप्न में देखे हुए धन का जागृत में नाश से मोह किसी को भी नहीं हुआ है।

अर्थः-

स्वप्नवत समझे जब। सारा दिन समझो जो विचरण होता है, व्यवहार होता है, वह जागृत में होता है। उस समय इतनी awareness रहे कि यह भी बीत जाने वाला है। यह स्वप्न है। सपना है। जब अंदर में इतनी एक धारा, ये बहे कि सपने ज्यों संसार। सिर्फ बोलना नहीं है। इसकी सच्चाई

में जब जीते हो। पहले तो देह और आत्मा का विवेचन, अलग अलग करना। यह विवेक के सिवाय नहीं होता। इसलिए दादा भगवान ने बोला कि जाकर औरों को सुनाओ तो तुम्हारा सिमरन ये ही होता रहे। कान तुम्हारे पहले पहले सुनते हैं। सुनने के समय पूरी awareness या ध्यान की जरूरत ही नहीं पड़ती है। चाहिए जरूर। पर बीच में सौ काम कर लेते हो। बोलने में तो full concentration है। Fully concentrate, Fully aware, फिर ही जाकर के काम होता है। तैयारी पूरी अंदर से। फिर ही जाकर के शब्द में बल आता है, नहीं तो आएगा ही नहीं। पहले यह पूछना अपने से, देह और आत्मा को अलग किया? खाली एक बारी अलग करके बैठ जाने की बात नहीं है। हर क्षण, क्या मैं ये देह हूं? नहीं। क्योंकि माया का मारण ही, हरि नाम है। पहली पहली माया यह शरीर। दूसरी माया मन का स्वभाव, संस्कार, आदतें, सब माया है। देह के संग ये सब लगे हुए हैं। तुम देह ही नहीं तो ये सब बातें भी नहीं। हर समय की साधना है, हर क्षण की। तभी जाकर इस दिखने वाली दुनिया से और पिछले कर्मों से, स्वभावों से, संस्कारों से छुटकारा मिलेगा। माना मजाक की बात नहीं है। बोरिया बिस्तर बंद करके सो जाने की बात नहीं। यह तो लगातार तेल धारा सदृश्य, जब इसका चिंतन, मनन। ऐसे लग जाए। अंदर जैसे कील लगी रहती है चुभने

वाली। यह ज्ञान भी ऐसे कील जैसा लग जाए तभी जाकर काम होता है। जो इस बात में रहते होंगे वो इसका प्रत्यक्ष फल देखते होंगे। इसमें कोई दो राय नहीं हैं। यह कोई स्पेशल दो चार की बात ही नहीं है। जो ओटे सो अर्जुन। जो इस बात में लग जाते हैं। तुम अपने आप को शैतानी से, ठगी से छुड़ा सकते हो, हम तो बाबा गृहस्थी लोग हैं। कहां लिखा पढ़ा है कि तुम गृहस्थी हो। वह सन्यासी है, 1% खाली तो गृहस्थी भी 1% खाली। 99% तो तुम गृहस्थी हो ही नहीं। जो इस 1% को झुला रहे हो सारा दिन, क्या गृहस्थी छूट जाएगा? आत्मा न गृहस्थी है ना सन्यासी है। मन माया में था, अब ज्ञान में आ गया। उसमें कहां लिखा पढ़ा है गृहस्थी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी। शुक्र है कहीं लिखा हुआ नहीं है। कुछ भी लिखा हुआ नहीं है, ना नाम लिखा हुआ है, ना गृहस्थी, ना स्त्री, ना मर्द। सब मान्यता है। मेरे बच्चे कहां से आए? भगवान दावा करता है कि मैं बना हूं? तुम कहते हो मेरा बच्चा, मैंने नौ महीने बच्चे को पेट में रखा। दूसरा रखो? तुमने तो रखा एक बच्चा, दो बच्चे। तीसरा रखो? वह होता ही नहीं है। माना रखा ही नहीं तुमने। यह परमात्मा ने सेफ्टी (Safety) जगह बनाकर आप आया उसमें। तुम तो एक छोटा सा दाना चेहरे पर निकल आए तो उसको ही नहीं रखना चाहते हो तो बच्चे को कैसे रखोगे। जब बच्चा पैदा होने वाला होता है, मां पुकारती है भगवान को, बच्चा भी

पुकारता है। माना बड़ा भगवान हुआ या तुम हुए? पर धौंसपट्टी कितनी? मैंने नौ महीने बच्चे को रखा पेट में। यह अज्ञानियों की भाषा है, ज्ञानियों की नहीं। अज्ञान की कई बातें ऐसी होती हैं, जो तुमको हंसी की लगेगी पर अपने पर। अपने पर ही हंसी आएगी, हम क्या-क्या बोलते थे, बड़बड़ करते थे। अभी वह तुम्हारी जात ही नहीं रही कि बड़बड़ करो। वैसे शब्द भी बोल पाओगे? जो पहले बोलते थे, बिंदास होकर बोलते थे। अभी बोलो। बाहर से रोक भी नहीं है, पर तुम्हारा अंदर वाला रोक देता है। मेरे मुंह पर शोभा देता है? शब्द ही नहीं आएगा, ख्याल ही नहीं आएगा। Quality ही change हो गई। इतनी हुई है तो उतनी भी हो सकती है। चाहो तो। असद्रूप याने असत् रूप माना मिथ्या। जो सत्य नहीं है, मिथ्या है। 'असद्रूप स्त्री, पुत्र और धनादिकों के साथ मेरा वियोग हो जाएगा, तो महान आश्चर्य है।' बिल्कुल top की बात उसने पकड़ी, जहां से वह नीचे आना ही नहीं चाहता है। अष्टावक्र राजा जनक को वहां देखना चाहता है कि मेरा अपनी स्त्री से वियोग हो जाएगा, धन मेरा चला जाएगा, बच्चा मेरा चला जाएगा तो कैसे होगा। जीवसृष्टि, ईश्वरसृष्टि। ईश्वरसृष्टि में तो कोई फर्क नहीं आएगा। सच्चाई है। परमात्मा की सृष्टि में कुछ भी घटावदाई होगी? बाकी है भीतर के मानसिक धरातल पर तुमने जो सोचा वैसा फर्क आएगा। नहीं तुम सोचो तो नहीं आएगा। ज्ञान की

पराकाष्ठा वाली condition में पहुंच जाते हो, तो नहीं आएगा। अगर नीचे आते हो तो आएगा। क्यों? मन के रूप। कभी emotional है, कभी logic चलाता है, intellectual है। कभी और लोग बात करेंगे तो उसमें आ जाते हो। पर जो सपने में भी, सपने में नहीं आता है, इतने तक अपने को पहुंचा देता है जागरण में, वो देखकर, सुनकर, बोलकर भी उनमें नहीं आता है। यह सच्ची स्थिति जब तुम अपने में प्राप्त कर लेते हो, अभय पद को प्राप्त कर लेते हो। और आए भी इसीलिए हो। छोटी मोटी स्थिति पाने के लिए नहीं आए हो। पूर्ण स्थिति में आने के सिवाय इधर शांति नहीं आएगी। अधूरी सधूरी सारी दुनिया है, शांति कहां है उसमें? क्यों नहीं पूरा करके एक तरफ हो जाते हैं। वो शांति, वो आनंद ही निराला है। चाहते हो ना पूर्ण शांति? कितनी दिल है? उसी पर मदार रखता है। एक तो ठंडी गैस पर ही खाना पका लेते हैं, एक fast पर। कभी slow, sim, कभी कैसे। वह अपनी-अपनी मर्जी है। वह अपने से पूछना। क्या जोश ठंडा है? आज तेज है? तेज है तो काम हुआ पड़ा है। उस आदमी को कहीं जाना था। वहां रास्ते में एक सत्पुरुष बैठा था। उससे पूछा फलानी जगह जाना है, कितना समय लगेगा मेरे को जाने में? जवाब ही नहीं दिया उस सत्पुरुष ने। वह आदमी थक कर, चिढ़कर आगे बढ़ा fast, उस सत्पुरुष ने कहा, ठहरो भाई, एक घंटा लगेगा। उस

आदमी ने कहा, एक घंटा कहने में आपको एक घंटा लग गया। कितनी बार पूछा आपने बताया नहीं। सत्पुरुष ने कहा, देखूं तो सही तुम्हारी speed कितनी है? Slow speed वाले को दो घंटे लग सकता है। Fast speed वाले को एक घंटा। तुम जो इतना fast जा रहे हो, तो speed देखकर बोलूंगा ना, ऐसे ही थोड़ा ही बोलूंगा। उस आदमी ने कहा अच्छा यह बात। अनुभवी है व्यक्ति। चिढ़ निकल गई, अनुभव याद आया। कितनी speed है, उसी से तुम्हारा आत्मा, परमात्मा हाथ में आएगा। चाहते सब हैं।

सद त सब ता कन, सदिन सदो ही सौदा नाहे।

सद करने से, रीस करने से, चढ़ता चढ़ती करने से, नहीं होता है।

तुम अपने अंदर जाकर जब मरते हो, गुम हो जाते हो।

ज्ञानी को शोक और कोप भी न होना चाहिए। ज्ञानी पुरुष लोगों की दृष्टि में विषयों को भोगता हुआ भी और लोगों से निंदित और पीड़ा को प्राप्त हुआ भी, सर्वदा सुख-दुख के भोग से रहित केवल आत्मा को देखता हुआ ना तो हर्ष को और ना कोप को प्राप्त होता है। क्योंकि तोष और रोष आत्मा में नहीं रह सकते हैं। यदि ज्ञानी में भी तोष और रोष रहें, तो बड़ा आश्चर्य है।

अर्थः-

तोष माना संतोष। रोष माना क्रोध। तो समझो अब ज्ञानी की आंखें, ये इंद्रियां और यह मन। अब आंखें बंद करके तो नहीं चलेगा। आंखें अपना विषय, देखती हैं। दृष्टि और दृश्य। शब्द और श्रवण। नाक, नासिका और सूंघना। अब वह चाहे ना चाहे, फूल पड़ा है तो उसकी सुगंध उसको आएगी ही आएगी। दृश्य आंखें देखेंगी ही। संगीत बज रहा है। ज्ञानी सुनेगा और दुनिया का व्यक्ति भी सुनेगा। ऐसा नहीं है कि ज्ञानी को सुनाई नहीं पड़ेगा। ये ढोंग है फिर। ये ठगी है। ये एक आडंबर में, चालाकी है। हम तो सुनते हुए भी सुनते नहीं। भोगते ना भोगता चालाकी वाले शब्द। माना भोग रहा है पर बोलता है कि नहीं भोगता। हां दूसरे को देखे कि भोगते ना भोगता। वो अलग बात है। पर भोगते ना भोगता ऐसा कहते हैं वो माना भोग रहा है, शब्द बोल रहा है कि नहीं भोगता। क्योंकि attraction है तो। आसक्ति है तो। बोला ज्ञानी भी तुमको तरह-तरह के दिखेंगे। उर्वशी, मेनका के सामने बैठा हुआ ज्ञानी। Attraction नहीं होता है। मेनका चली जाती है, attraction नहीं है, दुख भी नहीं। बोला ना तोष याने न खुशी होती है। संतोष नहीं, खुशी नहीं और ना ही रोष होता है जब विषय छूट जाते हैं। क्योंकि विषयों में आसक्ति ही रुलाती है। जो रोता है मन क्योंकि जहां जहां आसक्त मन। और एक आसक्ति

नहीं। पता नहीं करोड़ों आसक्तियां। अंदर पड़ी रहती हैं। करोड़ बार व्यक्ति रोता है, जलता है, भुनता है। जो जो विषय असमर्थ से छुड़ाए जाते हैं, भोग छुड़ाए जाते हैं तो रोएगा, दुखी होगा। हिलेगा, पिटेगा, सब होगा। और जो समर्थ है, उसने पहले से ही आसक्ति का त्याग करके बैठा वहीं है, भागा भी नहीं है, अब आ रहा है, जा रहा है। बच्चे को सोने का खिलौना दो या ले लो, उसको कोई फर्क नहीं पड़ता। ज्ञानी बच्चे सदृश्य हो जाता है। उसके पहले ज़रूर परहेज़ में रहेंगे, तभी एक ही दिन में कोई ज्ञानी, ब्रह्म ज्ञानी नहीं हो जाता है। सारी माया का अंदर से मरण भी तो हो जाए। जरूर परहेज़ रहेगी। गला खराब है, तुम तला हुआ खाएंगे? बीमार हो तो परहेज़। बीमारियां इतनी लेकर आए सत्संग में। उतनी परहेज़ तो पहले चाहिए। भोगते ना भोगता अक्षर बनता ही नहीं है। ब्रह्मज्ञानी को देखते हो। यह भी देखते हो कि उसका खिलौना ले भी लिया तो परवाह नहीं। बोला पीड़ा को भी अगर वो प्राप्त होता है तो भी शिकायत नहीं। वहां राजा जनक के लिए दिखाते हैं कि एक टांग को सुंदर स्त्रियां दबा रही हैं, दूसरी टांग आग में पड़ी है। आग में मतलब आग तो किसी को भी जलाएगी। मतलब इतनी पीड़ा, इतने दुख, इतनी तकलीफ, मे दोनों में समान, अपने आतम में मगन। जो तोष और रोष को सुख, दुख में प्राप्त होता है, माना वो ज्ञानी नहीं। संतोष में, तृप्ति में

जब तुम्हारे भीतर तृप्ति है, अपने ही ज्ञान से तृप्त हो, भरपूर हो, मालामाल हो जाते हो। कहीं पर भी और बात का विचार, अभाव, कोई चला गया, ऐसा नहीं। फिर आगाह कर रहे हैं ये उनकी स्थिति हम बखान कर रहे हैं, आप लोगों के लिए पूरा नहीं तो फिर theory हो जाएगी। और theory, practical हो जानी चाहिए नहीं तो माया repetition लगा रहेगा। गड़बड़ लगी रहेगी। एक बात को चार बार कहोगे। एक बात को आधे में भी कह कर पटा सकते हो। खत्म करो माया की बात और परमात्मा की बात बार-बार। ये आत्मा बार बार सुना है। बार-बार की मेहनत है। बच्चे से खिलौना ले लो तो चिल्लाता है, हाय तौबा मचाता है। उसको सोने और मिट्टी का पता नहीं, पर खिलौने का पता है। ले लो उसके हाथ से तो इतना रोता चिल्लाता है जैसे किसी ने मारा हो। यह मन भी ऐसे ही बच्चे जैसा किसी चीज में अटका, फंसा, छूट गई वो चीज तो रोएगा।

गीता भगवान पत्र संख्या - 15

1) There is no oil if olives are not squeezed. No wine if grapes are not pressed, no perfumes if flowers are not crushed. If you feel pressure in life don't worry God is just bringing out the best in you.

तिल में से तेल तब तक नहीं निकलेगा, जब तक वो खुद को नहीं गंवाएंगे। जब तक अंगूरों को दबाकर निचोड़कर उनका रस नहीं निकलता तब तक नशा चढ़ाने वाली अंगूरी नहीं बन सकती। Perfumes यानी इत्र तब तक तैयार नहीं हो सकते, जब तक फूलों को मसला ना जाए। उसी तरह अगर आप कभी अनचाही तकलीफों और हालातों को खुद पर हावी होते देखे तो विचलित ना होए, क्योंकि भगवान आपको जग से न्यारा बनाना चाहता है, आप में से माणिक मोती निकालना चाहता है, जो खुद आपको भी पता नहीं था। दादा भगवान कहते हैं 'आप गंवाइए ता शव पाइए'। खुदी को खत्म करेंगे तो ही खुद खुदा होंगे। अज्ञान वश हमारी गर्दन अहंकार में अड़ी रहती थी, मन कहता था, मैं क्यों झुकूं लेकिन कामिल गुरु दादा भगवान मिले और कहा नहीं, "मेरे प्यारों अहंकार ऐसा दीमक है, जो तुम्हारे अस्तित्व को खोखला कर देगा, वह तुम्हें कभी खुद को जानने नहीं देगा, अपने आप को मिटाना है, जिसने खुद को मिटाया

दुनिया उसके आगे झुकती है।" जो अपने से, अपनी आत्मा से फिट है, वो सारी दुनिया सृष्टि से फिट है। क्योंकि जिसने खुद को गंवाकर अपनी आत्मा को उजागर किया है वह हर जगह सिर्फ अपना आप ही देखेगा। कई बार लगता है कि मैं तो इनसे अच्छा चलती हूं लेकिन ये मेरे साथ अच्छा नहीं चलते, तो इसमें भी तुम्हारा ही दोष है। तुमने खुद को इतना नहीं गवाया होगा उससे निष्काम प्रेम नहीं किया होगा। तुम तो भगवान हो, तुम्हारे संकल्प से क्या नहीं हो सकता। दादा भगवान के अनुभवी और सच्चे वचन ने ये तो पक्का कर दिया है कि सोना आग में तपने के बाद ही एक खूबसूरत गहने का रूप लेता है। पत्थर हथौड़े खाने के बाद ही मूर्ति के स्वरूप में आता है, जिसे सारी दुनिया झुकती है। बस जिस दिन अपने सच्चे गुरु के आगे शीश दिया, अपने अहंकार को मिटाया फिर देखो गुरु के वचनों का कमाल, वो हमारे सच्चे अस्तित्व से हमारी पहचान कराता है, हमारी हलत पलत निखारता है, हमारी वाणी में इतना प्रेम भरता है, जो सुनता है उसे ऐसा नशा आता है, उसे माया रूपी अंगूरी पीने की जरूरत ही नहीं पड़ती। ऐसी नम्रता और हलीमाई की इत्र छिड़कता है, हमारे साथ साथ हमारे आस पास वाले भी प्रेम की खुशबू से महक उठते हैं। गुरु हमारे शरीर पर निष्काम रूपी ऐसा तेल लगाता

है, कि मोह वालों के हम हाथ से फिसल जाते हैं, बस सिर्फ और सिर्फ खुद को गंवाने की देर है।

2) The day you don't come across problems, take it for granted that you are traveling on wrong path.

जिस दिन आप किसी तकलीफ या अनचाही परिस्थिति के दौर से ना गुजरे, समझ लीजिए आप गलत राह पर हैं। अगर हमने दुख और तकलीफों को महसूस नहीं किया है तो हम सुख और आनंद को भी महसूस नहीं कर सकेंगे। आज हर कोई जिंदगी की ऊंच नीच से गुजर कर ज्ञान में आया है, और निष्काम गुरु दादा भगवान से हमारी मुलाकात हुई, जिन्होंने हमें जिंदगी के थपेड़ों से मुका लात करना सिखाया जिस दिन गुरु के आगे खुद को खुशी से ख्वाब किया, फिर क्या दुख, सुख, खुशी और तकलीफ। जैसे गुरु समानता में ले आता है फिर जिंदगी की किसी भी राह से गुजरे, वो आनंद और प्रफुल्लता से भरी होगी। क्योंकि पहले तो हम अहंकार रूपी पांव से चलते थे लेकिन अब दादा भगवान ने हमें अपने प्रेम और नम्रता वाले रथ में बिठा दिया है और कहा तू देह नहीं, आतम है, आत्मा है, और आत्म निवासियों के लिए हर राह जैसे फूलों से सजी रहती है, ऐसा नहीं है कि उनके सामने कोई हालत नहीं आती, आती है, उन्हें नहीं लगती क्योंकि ज्ञानी शरीर की बात, जगत की

बात, पानी पर लकीर की तरह भी नहीं भास्ती। गुरु मिलने के बाद तकलीफें आए भी तो समझना, भगवान के और करीब हो रहे हैं। शरीर का पर्दा हटता जा रहा है। जैसे फूलों के कारण कांटो की इज्जत की है, ऐसे ही भगवान की खातिर सूली भी सेज समझो। दादा भगवान के बच्चों को तो जीते जी ये will करनी ही है कि, यह सब कुछ परमात्मा का है।

3) God will never give you the burden that you can't handle, so if you find yourself in a difficult situation take as a compliment God thinks you can do.

परमात्मा हमें दुख और तकलीफों का ऐसा भार कभी नहीं देते हैं, जो हमारी सहनशक्ति से बाहर हो, अगर आप कभी खुद को किसी मुश्किल स्थिति में पाएं तो उसे आप भगवान का उपहार समझे। क्योंकि परमात्मा जानता है अगर किसी में तकलीफों को मुंह देने की क्षमता है तो वो है, दादा भगवान के खूबसूरत फुलवारी के खूबसूरत बच्चे यानी के हम, क्योंकि दादा भगवान ने ऐसी art सिखाई है कि अंदर से इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया है कि, मुझे तो मुंह देना ही नहीं है और ना ही मुझमें शक्ति है और एक बार जब निष्कामी और ब्रह्मज्ञानी गुरु दादा भगवान की पाठशाला में आ गए यानी कि खुद को उनके आगे surrender कर दिया तो हमारा

काम पूरा हुआ। अब मुंह देना ना देना गुरु जाने, क्योंकि उसके बाद तो देह अध्यास से निकलकर आत्मा की रोशनी में चमक उठते हैं। और हर एक हालात में, तकलीफ में, दादा भगवान की पाठशाला के बच्चे अव्वल ही नहीं, distinction में पास होते हैं, क्योंकि यह सबक हमेशा हमेशा याद रहता है "मता गुरु खे लजाई, मता ज्ञान खे लजाई" (ऐसा कोई काम नहीं करो जिससे गुरु को और तुम्हें लज्जित होना पड़े)।

4) Hard work is like the "stairs" and luck is like the "lift". Lift may fail sometimes but stairs will take you to top.

पुरुषार्थ करना सीढ़ियों के समान है और नसीब है लिफ्ट के समान, लिफ्ट कभी भी बिगड़ सकती है और हमें आधे रास्ते पर रुका सकती है। कभी-कभी तो ऊपर तक ले जाकर के धम से नीचे ला फेंकती है, लेकिन पुरुषार्थ रूपी सीढ़ियां हमें हमारी मंजिल तक पहुंचा कर ही छोड़ती है। दादा भगवान कहते हैं "पुरुषार्थ हमारा देव है" कड़ी मेहनत करने वालों को कभी भी किसी के आगे हाथ फैलाने की नौबत नहीं आती क्योंकि जो अपनी मदद करने को तत्पर होते हैं, परमात्मा हमेशा उनकी मदद करते हैं, जो एक एक सीढ़ी चढ़ने में विश्वास रखता है, उसे हमेशा कामयाबी मिलती है। यह समझ भी हमें ज्ञान में आने के बाद ही आई है, वरना

पहले तो हम shortcuts ही ढूंढते रहते थे। ज्ञान में आते ही पहले तो गुरु ने हमें खुद पर विश्वास करना सिखाया, खुद पर आशिक होना सिखाया और कहा तेरे अंदर है माल खजाना, क्यों तू बाहर निहारता है। तू ये दुनिया के छोटे-छोटे काम करने नहीं आया है, तू खुद को पहचानने आया है "पाण सुझाण आए सो भली करे आए" (अपने को पहचानने के लिए आए हो जग में) और फिर क्या था, गुरु की उंगली और पुरुषार्थ की सीढ़ी पकड़ी, निकल पड़े। आप सच माने, ज्ञान की राह पर चलते चलते यह अनुभव किया, जिन दुनियावी बातों को पूरा करने में हम अपनी जान लगा देते थे, फिर भी तृप्ति नहीं आती थी, वो जैसे रूग में खुद ब खुद हो रहे हैं, finally जिस दिन गुरु को पूरी तरह से surrender कर दिया, फिर क्या था, गुरु ने अपनी ज्ञान रूपी लिफ्ट में बिठाया। यकीन मानिए गुरु की लिफ्ट कभी भी नहीं फेल होती क्योंकि वो प्रेम, नम्रता और श्रद्धा के गाड़ों से बनी होती है जो हमें हमारे असली घर आतम निवास में पहुंचाकर ही छोड़ती है क्योंकि यह कुदरत का हमारे साथ कौल है, नियम है, जो सच्चाई से एक कदम आगे बढ़ता है, भगवान, प्रकृति सौ कदम आगे आती है।

5) Life gives answers in three ways

a) It says 'yes' and gives you what you want

b) It says 'no' and gives you something better

c) It says 'wait' and gives you best. Thus friends, human beings are never at loss.

परमात्मा हमें हमारे मांगे हुए सवालों का तीन रूपों में जवाब देते हैं। एक, तुमने जो मांगा वो तुम्हें मिला और इंसान खुश और वह खुशी पल भर की। दो, पहले परमात्मा No करता है, यानी सुनने में वक्त लगाता है, कहता है अधीरज मत होना, तुम्हारे मांगे हुए से तुम्हें काफी ज्यादा मिलेगा थोड़ा धीरज रखो, तुम पीतल की खान मांग रहे हो, लेकिन चांदी की खान आने वाली है। तीन, इंतजार करो, सब्र करो परमात्मा हमारे धीरज की परीक्षा लेता है और कहता है मैं तुम्हें उतना दूंगा, जितना तुम मांग भी नहीं सकोगे। फिर हमें मिलते हैं, निरिच्छा गुरु दादा भगवान जिन्हें हमारे लिए इतनी करुणा होती है, कि ये खुद खुदा हैं क्यों देह के धर्म में आकर अपना शहंशाह पना भूल रहे हैं, फिर वो हमारी मांग रूपी नाग को हमेशा हमेशा के लिए कुचल देते हैं। इतना विश्वास दिलाते हैं कि तुम्हारी किस्मत तो सोने की इंक से लिखी हुई है, क्यों तुम इन तुच्छ तुच्छ पदार्थों के लिए, अपने शुद्ध और निर्विकारी अस्तित्व को दांव पर लगाते हो, सच्चा गुरु तो हमें बिन कौड़ी बादशाह बना देता है। इतना निरिच्छा बना देता है, कि प्रारब्ध हमारे सुख ले लेकर हमारे पीछे पीछे आती है

और दादा भगवान कहते हैं "He is a brave man who can say No"। ऐसा power तो सिर्फ़ और सिर्फ़ निष्काम से ही आता है। रवाजी इंसान जिंदगी से प्यार करता है लेकिन हमें मौत से प्यार करना है, मौत से प्यार करने का मतलब है दूसरों को जगाने के लिए अपने आप को कुर्बान करना। जिस दिन गुरु का अनमोल दिया हुआ खजाना बांटना शुरू किया तो खुद के लिए मांगना जैसे बेइज्जती लगेगी क्योंकि कभी देखा है शहंशाह को हाथ फैलाते हुए, राजा तो हमेशा देते हुए ही अच्छा लगता है। गुरु ने भी हमारी तिजोरी नम्रता, प्रेम, कुर्बानी से इतनी भर दी है और तिजोरी भी ऐसी जादू वाली दी है जितना बांटते हैं और भरती जाती है, तो अब आप बताइए क्या हमारी कभी भी कहीं भी लार टपकेगी, infact दूसरों की टपकती है हमें देखकर, वो सोचते हैं हमारे पास कितनी माया, गाड़ियां, दुनिया के हर पदार्थ से लबालब है, फिर भी चेहरे पर एक छोटी सी सच्ची मुस्कान भी नहीं आती और ये दादा भगवान के बच्चे बिन कौड़ी के बादशाह हैं। लोग कहते हैं, हमें एक एक हीमोग्लोबिन के पॉइंट बढ़ाने में जान निकल जाती है और इन्हें देखो सच्चे गुरु के बच्चे, जैसे टमाटर की तरह लाल लाल लगे पड़े हैं तो कितना कितना हमें गुरु पे बलिहार होना चाहिए, जो खुद तो न्यारा है ही, हमें भी गृहस्थ में रहने के बावजूद ऐसा न्यारा बनाता है जैसे कीचड़ में खिला हुआ कमल।

6) “Little faith says you can do it”, “Big faith says you will do it”, “Great faith says its done”. Nothing is impossible if you believe in yourself.

जब तक हमें खुद पर, खुदा पर भरोसा नहीं था, तो अंदर वाला कहता था शायद मैं कर सकती हूं, फिर जब ज्ञान में आए तो थोड़ा विश्वास बढ़ा और अंदर वाले ने गवाही दी, मैं कर सकता हूं, यानी निश्चय आत्मिक बुद्धि, लेकिन जिस दिन अपनी बुद्धि गंवाकर गुरु के आगे surrender किया तो निराकार पर पूरी तरह से विश्वास आया, उसके न्याय पर विश्वास आया, खुद पर विश्वास आया और अंदर वाले ने खातरी दी के सब हुआ पड़ा है, गुरु ने कहा तू तो खुद खुदा है, सत चित आनंद स्वरूप है, करना ना करना यह सोचना भी तेरा धर्म नहीं है, सिर्फ दादा भगवान के बच्चों में ही यह शक्ति है जो कर्ता अकर्ता से ऊपर उठकर दृष्टा हो सकते हैं। क्योंकि गुरु ने हमारे अंदर कूट-कूट कर भरा है, “Thy will be done O lord Thy will be done” हे परमात्मा तेरा सोचा हुआ पूरा हो मेरा नहीं। विश्वास तो ऐसी करामतों की करामत है कि हम पहाड़ से भी पानी निकाल सकते हैं। ज्ञानी के लिए कुछ भी impossible नहीं है, बल्कि वो I am possible करके देखता है। बस अब अंदर से यही निकलता है “हम हर धक्के खाएंगे पर आनंद ही कमाएंगे”, सब रिश्ते नाते

तोड़ेंगे, दिल एक आत्मा में जोड़ेंगे, हम सूखे चने चबाएंगे पर गुरु पर वारी जाएंगे, हम सूखी रोटी खाएंगे, मस्त पड़े रह जाएंगे, हम गाली ताना खाएंगे पर एको ब्रह्म लखाएंगे।

7) Waves are inspiring, not because they rise and fall but because each time they fall, they never fail to rise again.

लहरें हमें प्रेरित करती हैं इसलिए नहीं कि वो ऊपर उठती है फिर समुद्र में लय हो जाती हैं, बल्कि इसलिए वो हर बार गिरती हैं, लेकिन फिर ऊपर उठना कभी नहीं भूलती, गुरु कहता है आगे बढ़ा कदम रुकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान। गुरु कहते हैं लहरों की तरह ऊपर उठने की हमेशा कोशिश करते रहो, चिंता नहीं करो, गिरकर संभलने वाले को ही शूरवीर कहते हैं। जैसे पहले हम ज्ञान में आए तो मन कहता था, अभी तक तो तू अपने विकारों से ऊपर नहीं उठ पा रहा है, गुरु कहता है, क्रोध नहीं कर फिर भी हो जाता है, क्या फायदा ज्ञान में आने का? अगर गिरने के डर से हम घर पर बैठ जाते तो ना जाने आज क्या होते हमारी हड्डियां भी ना मिलती। लेकिन हमारे दादा भगवान ने हमारे डूबते हुए मन को उसके बालों से खींचकर हमेशा हमेशा के लिए मन के भंवर से छुटकारा दिला दिया। हम गिरते भी कहां थे मोह में, झूठी इज्जत और मान की

लालच में। इज्जत की पगड़ी सर पर रखोगे तो रोज-रोज कोई उतारकर जाएगा, पगड़ी अपने हाथ से ही निकालकर फेंको तो कोई पैदा ही नहीं हुआ है, जो तुम्हारी पगड़ी में हाथ डाल सके। शुरुआत में हम गिरते हैं, उठते हैं, गिरते हैं, जैसे जैसे गुरु के वचन अंदर जाकर काम करते हैं तो गुरु जैसे still कर देता है। लेकिन फिर बीच में मन कहता है 'आहे ओखे कम गुरु मुख, ज्ञानी थियड़, जडे दम ते रखे कदम तदहि पास पक्क थिये'। (बात कठिन है पर गुरु के मुख से ज्ञान सुनकर तुम्हारा हर कदम सही दिशा में उठना चाहिए तभी तुम pass होगे) दम पर कदम रखना माना श्वास श्वास पर सावधानी रखना, गुरु कहता है, जल्दी सब अपनी आत्मा में स्थित हो जाओ क्योंकि तुम शरीर नहीं हो, खुद खुदा हो बहुत उठना गिरना हो गया, 'मान, मुसीबत, इज्जत ठगो सियाणो उहो जो बिन नीन खा भगो'। (मान इज्जत पाने की इच्छा है तो जीवन बोझिल हो जाएगा, स्याना वो है जो इनसे अपने को बचाए) गुरु कहते हैं अपनी बुद्धि बिल्कुल गवानी है, गुरु की मत पर चलने वाला कभी नहीं गिरता है, बल्कि गुरु के वचनों रूपी नाव में इस माया रुपी समुद्र में शान से सैर करता है, अपने साथ-साथ और लाखों को भी तारता है। यह सिर्फ और सिर्फ हमारे दादा भगवान के सत्संग में ही होता है, जहां गुरु अपने शिष्य को आप समान बनाना चाहता है और चाहता है आगे सब प्रेमी ऐसे ही जोत से

जोत जलाते रहे। दादा भगवान के ज्ञान और निष्कामी रूपी बीज सारी सृष्टि में हैं, उन्हें अब फलने फूलने से कोई नहीं रोक सकता है। दादा भगवान के लाख लाख, करोड़ करोड़ शुकराने हैं, जिन्होंने हमें इस जलती हुई दुनिया में भी अपनी शीतल छाया में रखा है।

8) Living in favourable and non favourable situation is "Part of living" but smiling in all those situations is called "Art of living".

चाही और अनचाही स्थिति में जीना यह हमारे जीवन का हिस्सा है, लेकिन किसी भी स्थिति को प्यारी सी मुस्कान के साथ जीना, एक खुशनुमा जिंदगी जीने की कला है। सिर्फ हमारे दादा भगवान के ज्ञान में रोजमर्रा की छोटी-छोटी बातें जो कि हमारा पूरी तरह से सुख चैन छीन लेती है, उनसे ऊपर उठने की कला सिखाते हैं। सिर्फ दादा भगवान के बच्चे ही कैसी भी स्थिति को मुस्कुराते हुए शुक्रानों के साथ, द्दष्टा होकर उसे गुजरता हुआ देखते हैं, क्योंकि हमें हमारे गुरु ने बता दिया है "Nothing is new under the sun". जिसने दादा भगवान का ज्ञान सुन लिया वह सिर्फ जीते नहीं है, बल्कि जिंदादिली और आनंद से जीते हैं और जो एक बार आनंद में आ गया तो उसके गहने ही मुस्कुराना और शुकराना हो जाते हैं। अपनी आत्मा में स्थित होने के बाद ही जाना है कि ठंडक

किसे कहते हैं। हम तो आग की भट्टी में जी रहे थे, अब दादा भगवान ने हमें खुद का ही architect बना दिया और हमें अब अपनी आत्मा का ऐसा सिंहासन बनाना है, जिसे कोई भी, कैसी भी हालत डोलायमान ना कर सके और अनहल पक्षी की तरह उड़ते ही रहना है।

गीता भगवान पत्र संख्या - 16

शुद्ध स्वरूप परम प्रिय सदैव अपने आत्मानंद में लीन रहो। प्रेम पत्र तुम्हारा मिला सब समाचार मालूम हुए। ज्ञानी की ही ऐसी स्थिति है जो हर हाल में खुश रहता है। प्रेममय होकर जीता है। सुख दुख सहित यह पूरा जगत ही मिथ्या है। इसमें ज्ञानी रहता है, तेल लगे हुए बर्तन की तरह। जैसे ऐसे बर्तन में पानी की एक बूंद भी नहीं चिपकती, ऐसे ही ज्ञानी के अंदर एक नामरूप भी नहीं ठहरता। दूसरों के नाम तो क्या पर यहां पर तो हम सब अपना नाम भी भुलाने आए हैं। भगवान ने इतना बड़ा जगत बनाया पेड़, पौधे, जानवर और इतना सुंदर चलता फिरता मनुष्य पर जड़ चाहे चेतन प्रकृति किसी पर भी भगवान का नाम नहीं लिखा है। वह तो ऐसा अदृश्य हो गया है, जो ढूंढने पर भी आसानी से नहीं मिलता। पर मनुष्य एक छोटा सा घर बनाएगा, उस पर भी अपना नाम लिखेगा, एक कविता लिखेगा प्रभु की दी हुई शक्ति से उसके नीचे भी अपना नाम लिखना नहीं भूलता है, सुंदर तन है भी प्रभु का ही निर्मित पर उस पर भी नाम अपना। कैसा आश्चर्य है कि इस नाम हासिल करने की होड़ में सारी दुनिया तहस-नहस हो रही है। खुद को गुम करो तो ना कोई बात, ना झगड़ा, ना फसाद, बस आनंद ही रह जाएगा। शेष हम सब मौज में हैं।

गीता भगवान पत्र संख्या - 17

शुद्ध स्वरूप परम प्रिय सदैव अपने आत्मानंद में लीन रहो।

संकेत मिलन का, भूल ना जाना, मेरा प्यार न बिसराना। इसी प्रेम में ही जगत भूलता है बाकी ज्ञान हम भले कितना ही क्यों ना सीख लें पर जीवन की मधुरिमा जीवन में लौट आती है प्रेम से। Love is God, God is Love.

यहां पर हम रोज़ सुबह को सत्संग में अष्टावक्र गीता पढ़ते हैं। सबको बहुत ही मौज आती है। आज पड़ा कि ज्ञानी ना तो जागता है और ना सोता है। इसका भावार्थ है कि जो जागता है उसकी आंखें पूरी खुली होती है। आंखों में ऐसी कुदरती automatic camera फिट है कि जो भी दृश्य वो देखती है उसका चित्र अंदर खिंच जाता है। वही नाम रूप अंदर में चित्रित हो जाते हैं। पर ज्ञानी की दृष्टि ऐसी है कि वह जो कुछ भी देखता है, वह As God करके। धम्म करके आंखें बंद नहीं करता कि मेरे को कुछ देखना ही नहीं है। ज्ञानी की आंखें हैं, मरी हुई बिल्ली की तरह। लगता है कि वह देख रहा है बाहर का जगत पर उसकी दृष्टि है भगवान की। एक गुरु और उसके शिष्यों के सामने उर्वशी अप्सरा ने नृत्य किया। वह धीरे-धीरे सब कपड़े उतार कर निर्वस्त्र हो गई। शिष्यों ने

तो आंख बंद कर ली पर गुरु जी ने कहा कि ऐसा नृत्य तो मोर और पक्षी सभी करते हैं, लाज की क्या बात है? उर्वशी और वस्त्र उतारो, देखो उर्वशी कहां है? उर्वशी संत के चरणों में गिर पड़ी। शिष्यों ने बाहर की दृष्टि रखी तो आंख बंद की पर गुरु की दृष्टि थी आत्मिक। वह देह अध्यास से ऊपर था तो उर्वशी को भी ज्ञान लग गया। ऊंची नजर पारखी होए। पारखी की दृष्टि है सोने पर, आभूषण की बनावट पर नहीं। हमारी नजर भी हो अंदर वाले परमात्मा पर, ना कि उसकी बाहरी वेशभूषा पर।

जो स्वयं को कुर्बान करता है वही यह अग्नि जलाकर बैठता है, जो रखता सिर हथेली पर, वह गाता जग के गाने। हम सभी मौज में हैं।

गीता भगवान पत्र संख्या - 18

सच्चिदानंद स्वरूप सदैव अपने सच्चे स्वरूप में मस्त रहो।

प्रेम पत्र तुम्हारा मिला पढ़कर बेहद मौज लूटी। तुम अपने निष्काम में खूब busy हो यह जानकर खुशी हुई। यह दादा भगवान का रंग बिरंगे फूलों का बगीचा दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। सत्संग से ही सच्ची खुशी आती है। यही निष्काम साधन भी है, सिद्धि भी है। गुरु ने सभी को इतना अखुट खजाना दे दिया है, जो लूटो और लुटाओ। अपना जीवन भी इसी से ही बनता है फिर अपने जीवन को देखकर गुरु के ज्ञान पर यकीन हुआ है। आज भी शाम को सत्संग का पॉइंट था कि किसी को देह से आसक्ति है, वो देह वासना है। देह से सुख मिलने की आशा है तो कभी सच्चा सुख नहीं मिलेगा पर अज्ञान में तो पति पत्नी दोनों ही एक दूसरे को शरीर के तल पर प्यार करते हैं तो दोनों ही अंधे मिलकर अनजान अपनी राह भुला देते हैं। पर गुरु जब सुजाग है तो वह जिज्ञासु को भी देह में अटकने नहीं देता है। गुरु की दृष्टि बहुत ऊंची है, वह जिज्ञासु को कहीं पर भी ठहरने नहीं देता है। जहां जहां कोई अटकता है तो वह उसको आगे से आगे बढ़ाता है। यही उसकी करुणा है, उसे डर है कि कहीं जिज्ञासु अपनी मंजिल के बजाय दूसरी ओर ना मुड़ जाए, मोती लेने तट पर तो आया है पर कहीं सीप से ही वह मन बहलाने लगे। जो महान

उद्देश्य लेकर यहां आया है, उसे ही पूरा पूरा प्राप्त कर ले, अधूरा ना रह जाए। अनन्य व अव्यभिचारी भक्ति योग से ही प्रभु मिलते हैं।

गीता भगवान पत्र संख्या - 19

शुद्ध स्वरूप परम प्रिय अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रहो।

दिल के पत्र तुम्हारे बार बार मिलते रहते हैं। प्रेम वाले को तो ज्ञान स्वत: ही लग जाता है बिना यत्न के। ज्ञान से परमात्मा को जाना जाता है पर प्रेम से परमात्मा हुआ जाता है। प्रीतम के रूप लावण्य और महिमा में इतनी शक्ति है कि यह मन टिक नहीं सकता, मन अमन हो जाता है। हे मन! तुम्हारा मरना जीने के समान है और तुम्हारा जीना मृत्यु के समान है। जब तक मन जीवित है तब तक मनुष्य तिल तिल करके मरता है। एक शब्द भी उसे विष के सदृश लगता है। पर एक बार गुरु इस मन को अमन बना देता है तो सच्चा जीवन मिलता है। दुख सुख, मान, अपमान से कोसों दूर इस जीवन में हम सच्ची मौज लेते हैं। जिस मरने ते जग डरे वो मोको आनंद। हमारे लिए तो मौज ही मौज है। Everyday is a holiday, every night golden night.

शेष हम लोग सब मौज में हैं।

गीता भगवान पत्र संख्या - 20

शुद्ध स्वरूप परम प्रिय सभी अपने निज आनंद में लीन रहें।

प्रेम पत्र प्रिय तुम्हारा मिला प्रेम की सतरंगी किरणें बिखेरता हुआ। जैसे उमड़ घुमड़ कर घटाएं सारे आकाश पर छा जाती हैं, वैसे ही तुम्हारा बाल सुलभ प्यार सारे पत्र पर फिर हमारे हृदय पर भी छा गया। सच्चा गुरु तो वह होता है, जो काम तुम्हारा मन ना मानता हो उसे करवा कर दिखाएं। हम सब के प्रेम का आकर्षण भी तभी सच्चा साबित होगा, जब तुम hate करने के बजाय पत्र लिखने को love करने लगो। कोई बात नहीं हमको पता है कि एक प्रेम ही ऐसा है जो अंदर में नई तरंग, नई उमंग पैदा कर सकता है। तुम्हारा लिखा हुआ दोहा भी बहुत पसंद आया। सच्ची बात है कि इन नेत्रों से अगर परमात्मा का दीदार करें तो असंतोष नाम की चीज रह ही ना सके। झूठी समर्पण की बातें आरती में तो झट से कह देते हैं पर जब गुरु साकार आता है तन, मन, धन लेने तो कुछ ना कुछ अपने लिए छुपा लेते हैं। आरती में फूल, कपूर, सिंदूर, जला हुआ दीया रखते हैं। ये सब तो symbols है बाहर का पुष्प नहीं पर तुम्हारा हृदय रूपी पुष्प प्रभु के चरणों में अर्पित हो जाए। फूल की तरह कोमल और सुगंध फैलाने वाला तुम्हारा जीवन बने। सबको खुशबू मिले पर तुमको अहसास भी ना हो। कपूर की जैसे राख भी नहीं बचती, ऐसे ही तुम्हारा अहंकार,

तुम्हारा जीव भाव भस्म हो जाए। अगरबत्ती की तरह खुद जलकर सबको मीठी श्वांस दो। तुम्हारा चेहरा सिंदूरी यानी प्रफुल्लित रहे हर समय। प्रेम रूपी तेल, भक्ति रूपी बाती से ज्ञान का दीप हमेशा झिलमिलाता रहे तेरे मन मंदिर में। ऐसा दीप जलेगा तो अज्ञान की क्या मजाल जो तुम्हें छू भी सके। Gyan means knowledge, Knowledge means power. इसी शक्ति से तुम सदैव अपने को शक्तिशाली Son of God अनुभव करेंगे।

गीता भगवान पत्र संख्या - 21

शुद्ध स्वरूप परम प्रिय सदैव अखंड आतम मस्ती में लीन रहो।

पत्र तुम्हारा स्नेह युक्त आज मिला है। ऐसे प्रभु प्रेम के रस से भीगे हुए पत्रों को हजम करने की ताकत किसी को नहीं है। एक बार, एक फकीर अपनी उंगली दिखा कर सुनार को कहता है कि खुदा की उंगली की अंगूठी बना कर दो। सुनार को बहुत क्रोध आया, उसने चारों तरफ से बात फैला दी कि यह फकीर अपने को खुदा कहता है। काज़ी मुल्ला सब इकट्ठे हुए बोलने लगे, तुम अपने को खुदा कैसे कहते हो? फकीर ने कहा, ब्रह्मांड में प्रत्येक वस्तु किसकी बनाई हुई है। जवाब मिला खुदा की। झटपट फकीर ने कहा तो फिर बाकी यह उंगली खुदा की नहीं है क्या? जो हर चीज परमात्मा की समझता है वही फिक्र से खाली होता है। मैं और मेरा, गुरु के चरणों में सौंप दिया तो फिर गम, चिंता, सबकी छुट्टी हो जाती है और बदले में मिलती है अखुट मौज। चखा जिसने वही जाने।

गीता भगवान पत्र संख्या - 22

सत चित आनंद स्वरूप परम प्रिय। सदैव आत्मानंद में रहकर सभी को आत्म जागृति देने में व्यस्त। हर एक अपनी खुशबू प्यार छोड़ जाता है। इसीलिए दादाजी रोज बताते थे जल्दी अपना काम पूरा करके बैठो, शरीर बेवफा, बेबका है, एक दम वाला है, किसका आधार लेकर बैठे हैं, क्या अहंकार करता है? मैं मैं की रट तू बिसार.....

दादा जी हमेशा कहते थे, दुख दरवाजे पर खड़े हैं। तुम पहले ही ज्ञान समझ जाओ तो प्रभु के सिमरन दुख संताप नहीं करेगा। पर सुखों में मनुष्य इतना भाग दौड़ में busy है कि सिमरन का समय ही नहीं मिलता है। जितना थोड़ा भी सिमरन भूल से कर लिया है, अनजाने में भी गुरु ज्ञान डाल देता है, वही समय पर काम में आता है। ज्ञान से ही सिर्फ शांति मिलती है, फिर फिर भलाई मानते हैं, शुक्र है। सूली से कांटा हो गया है। जिस हालत को चेंज नहीं कर सकते हैं, अपना वश भी नहीं चलता, तभी शुकराना मानने के सिवाय कोई रास्ता नहीं है। रज़ा में राज़ी रहने से हर हालत जैसे गुजर जाती है। यही उत्तम भक्ति और बंदगी है। होनी भावी को कोई बदल नहीं सकता है, भावी अमेट है हुकमे अंदर हर कोई है। अपनी wish नहीं चलती है अपना सोचा कभी नहीं होता है। होता वही है जो खुदा को मंजूर है। गुरु की बारिश भी नित हो रही है,

जो वचनों को अमल में लाता है वह हमेशा नित्य सुख में आतम जागृति में रहता है। जाग रे मुसाफिर तू... बार-बार गुरु जगाता है अज्ञान की नींद से। बिना ज्ञान के अचानक जब घटना घटती है तभी हालत के अधीन हो जाते हैं out of control हो जाते हैं। उसी घर में जिसे ज्ञान प्राप्त है वह दुख सुख में समता भाव में रहता है।

दुख शब्द भगवान की डिक्शनरी में है ही नहीं। दुख है दावा में, जो वचन अमल में लाता है वह सुखी हो जाता है। सुख सागर में रहता है मैं मेरी कर दूर समता भाव में आ जाता है। दुख के लिए No Entry का बोर्ड लगा दो।

सभी परम प्यारों के लिए बेहद प्यार।

गीता भगवान पत्र संख्या - 23

The cheapest stupidity is finding faults. तुम तो हर समय दूसरों की गलतियां ही देखता रहता है। दूसरों को सलाह देना सरल है पर कठिन में कठिन काम है, उस सलाह पर खुद चलना।

The greatest success is never feeling tired. जीवन की सबसे बड़ी सफलता है कि हम थके नहीं। अथक होकर आगे बढ़ते चलो। हर बात में भलाई देख कर मुस्कुराते चलो।

ब्रह्मज्ञानी माना नम्रता और प्रसन्नता वाला। कभी भी वह कोई बात अहंकार से नहीं करता। जिसके पास नम्रता का गहना नहीं है, वह तो ज्ञानी कहलाने के लायक नहीं है। अपने से इस बात को पूछना कि कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम केवल शेर की खाल ओढ़कर चल रहे हैं? अंदर से अज्ञान भरा हो और बाहर से ज्ञानी का पोज़ बना कर बैठे हैं? हर कार्य तुम धीरज में करते हैं, अधीरज है या जल्दी थक जाते हैं? कभी भी प्यार देकर थकना नहीं, सारी सृष्टि के हित के लिए तुम अपना संपूर्ण जीवन ही दे दो। इस धरती पर हम सब आते ही हैं, प्रेम करने के लिए।

आजकल कर्तव्य तो करना कोई चाहता ही नहीं है पर अधिकार सब चाहते हैं। जीवन में रिवॉल्यूशन सब लाना चाहते हो। कई तो फिर गुरु से भी

प्रश्न करते हैं कि कल तक तो आपने ऐसा कहा था, आज ऐसा क्यों? मिलिट्री के सोल्जर, देश की रक्षा के लिए जान जोखिम में डाल देते हैं। तुम तो थोड़ी ही मेहनत करके थक जाते हो। ज्ञानी माना जो अपने को mould कर सके। गुरु ने जीवन को ऐसे मोड़ दिया रबड़ की गुड़िया हो जैसे।

यहां पर भी तुम सभी का आपस में प्रेम का संबंध होना जरूरी है। चींटी रास्ते से जाती है तो पीछे खुशबू छोड़ती जाती है। फिर दूसरी चींटियाँ भी उसके पीछे जाती हैं। तुम भी ऐसी प्यार की खुशबू छोड़ कर जाओ कि सारी दुनिया तुम्हें फॉलो करें। World goes with speaker. आज का दिन टीचर्स डे मनाया जाता है बच्चे टीचर्स को गिफ्ट देते हैं, अनुभव करते हैं, कि टीचर्स ने हमारा जीवन बनाया है। शुकराना मानते हैं। गुरु को हम कौन सी गिफ्ट देते हैं? केवल हम गुरु से प्रेम करते चलें तो अहंकार तो गुरु हमसे खुद ही छीन लेगा।

बनने के बाद भी पानी का मटका कितना संभाल कर उठाते हैं। ऊपर से भी पकड़ते हैं नीचे से भी पकड़ते हैं। ऐसे ही अंत तक अपने जीवन की भी संभाल करनी है। कभी भी अहंकार ना आए, कभी भी राग, द्वेष कोई विकार ना आए। अंत तक गुरु से हमारी निभ जाए।

पानी भरे पन्हारिया रंग बिरंग घड़े

भरिया उसका जानिए जा का तोड़ चढ़े।

जिसकी सीखने की खिड़की खुली है, वह तो हर एक से सीखता ही चला चलता है। दत्तात्रेय ने 24 गुरु करे जब तक एकत्व भाव नहीं आया, तब तक झगड़ा बना ही रहेगा। सारे झगड़े हैं केवल द्वेष के कारण। जिसका गुरु से अनंत प्यार है उसका विचार गुरु से मिलकर एक हो जाता है। मिले सुर मेरा तुम्हारा। अस्तित्व बचना ही नहीं चाहिए। पानी में मिली जैसे नमक डली हम राम में ऐसे रम जाए। गुरु के पास आकर अपना सर्वस्व भेंट करो। प्रभु के सिमरन दुख ना संतापे, काल पर हरे, दुश्मन टरे, भय न व्यापे, सर्व सुख होवत।

हरि रूठे, तो गुरु ठौर है, और गुरु रूठे, तो फिर उसे कोई भी तुम्हें मना कर नहीं दे सकता। गुरु और शिष्य नदी पार कर रहे थे। शिष्य को बोला, तुम वताऊं वताऊं बोलना, तुम पार हो जाओगे। वताऊं गुरु का नाम था। शिष्य ने गुरु के समीप आकर सुना तो गुरु अल्लाह हूं अल्लाह हूं बोल रहा था। शिष्य ने भी अल्लाह हूं बोला तो डूबने लगा। बोला गुरु जी मैं डूब रहा हूं, गुरु ने कहा कहीं मंत्र तो नहीं बदल दिया। शिष्य ने बोला, मैंने अल्लाह हूं बोला। गुरु ने बोला, अभी तक तुम संपूर्ण मोह, माया, देह के विकारों से ऊंचा नहीं उठा है, इसलिए तुम्हें अभी गुरु का

ही नाम लेना पड़ेगा। गुरु है निर्विकार वो आत्मा में स्थित है तो अल्लाह हूं, अल्लाह हूं बोलने का अधिकारी है।

divinepramilabhagwan.com